दैवज्ञजीवनाथझाप्रणीतं

प्रश्नभूषणम्

'प्रेक्षा' 'सौम्या' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्

आचार्य गुरुप्रसाद गौड़

www.44Books.com

तथा कुल श्लोकसंख्या 127 है। ग्रन्थकार ने इस ग्रन्थ में सरल पद्यरचना के स्पष्ट शब्दों में प्रश्न का विषय निरूपित किया है। श्लोकरचना करते समय आ जीवनाथ ने उनके अर्थ की बोधगम्यता तथा सुस्पष्टता का पूरा-पूरा ध्यान रखा पाठकों को अर्थग्रहण करने में भ्रम न हो, इस हेतु ग्रन्थकार की सजगता श्लाघ है। इसी कारण यह ग्रन्थ दैवज्ञों में अत्यधिक लोकप्रिय है।

ग्रन्थ के प्रणेता ने पूर्ववर्ती आचार्यों श्री वराहमिहिर, पृथुयशा, पद्मप्रभु आदि के विचारों को भली-भाँति आत्मसात् कर जो अनुभव की कसौटी पर उतरे हैं, उन्हें अपनी रचना में स्थान दिया है। इतना ही नहीं; वर्तमान समय आवश्यकताओं को देखते हुए उन्होंने प्रश्नशास्त्र को अद्यतन बनाने का प्रयास किया

इनके इस ग्रन्थ की महानता का पता हिन्दीभाषी ज्योतिषियों में प्रचलित दोहे से ही लग जाता है–

प्रश्नभूषण सम नहीं और दूसरो ग्रन्थ।
ज्योतिष के जिज्ञासु को बता देत है पन्थ॥

इसी उपयोगिता के कारण इस लघु कलेवर वाले ग्रन्थ को वर्तमान समय प्रचलित ज्योतिष-पाठ्यक्रमों में स्थान दिया गया है। यह ग्रन्थ ज्योतिष शास्त्र अध्येताओं की प्रश्नसम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सर्वथा सक्षम है- ऐ मेरा विश्वास है।

मकरसंक्रान्ति, संवत्-2059 विदुषामनुच
भागवतनिलयम्-म0 प्र0 **आचार्य गुरुप्रसाद गौ**

विषयानुक्रमणिका

	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
	1. सञ्ज्ञाध्यायः	
1.	मङ्गलाचरणम्	1
2.	कर्त्तव्यतायां हेतुमाह	2
3.	दैवज्ञलक्षणमाह	2
4.	प्रश्नकर्तुर्लक्षणमाह	3
5.	द्वादशभावानां संज्ञाकथनम्	4
6.	मेषादिद्वादशराशीनामधिपाः	5
7.	लग्नात्किं विचिन्त्यमित्याह	6
8.	धनभावात्किं विचिन्त्यमित्याह	6
9.	तृतीयभावाच्चिन्तनीयविषया उच्यन्ते	7
10.	सुखभावाद्विचारणीयविषयाः	8
11.	पञ्चमभावात्किं विचारणीयमित्याह	8
12.	षष्ठभावाच्चिन्तनीयविषयानाह	9
13.	सप्तमभावाच्चिन्तनीयविषयानाह	10
14.	अष्टमभावाद्विचारणीयविषयानाह	10
15.	नवमभवनाद्विचारणीयविषयानाह	11
16.	दशमभावाद्विचारणीयविषयानाह	12
17.	लाभभावाद्विचिन्तनीयविषयानाह	12
18.	व्ययभावाच्चिन्तनीयविषयानाह	13
19.	द्वादशभावानां फलविचारः संक्षेपेणाह	14
	2. सर्वप्रश्नाध्यायः	
1.	नानाप्रश्नफलार्थं सामान्यग्रहविचारणामाह	16
2.	कपटप्रश्नलक्षणम्	23
3.	संक्षेपात्सकलकार्यसिद्धिसूचकयोगमाह	23

www.44Books.com

क्रमाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
4.	पुनश्च कार्यसिद्धियोगमाह	25
5.	समयनिर्णयमाह	25

3. मौष्टिकादिप्रश्नाध्यायः

1.	मौष्टिकादिप्रश्नविचारमाह	28
2.	प्रकारान्तरेण धातुजीवमूलमाह	30

4. पथिकगमनागमनप्रश्नाध्यायः

1.	गमनागमनप्रश्नविचारः	34
2.	आगमनसमयमाह	35
3.	पुनश्च पथिकागमनसमयमाह	35
4.	सप्तमचन्द्रफलमाह	36
5.	आगमने चरराशिस्थितचन्द्रफलम्	37
6.	पथिकागमने चतुर्थभावफलम्	37
7.	गुरुशुक्रयोः फलम्	38
8.	चरराशिगतग्रहफलम्	38
9.	च्युत्यादिचिन्तकभावानाह	39
10.	पथिकागमनविचारः	39
11.	पथिकस्य मरणयोगमाह	40
12.	पथिकस्य कष्टयोगमाह	40
13.	उपद्रवयोगमाह	41
14.	शस्त्रभययोगमाह	42
15.	अर्थपूर्णयोगमाह	42
16.	पथिकादिगमनागमनयोगमाह	43
17.	चर-द्विस्वभावलग्नफलज्ञाह	43
18.	पथिकागमने दिनसंख्यामाह	44

5. नौकागमनप्रश्नाध्यायः

1.	नौकाप्रश्नविचारकभावमाह	46
2.	नौकाप्रश्ने शुभयोगमाह	47
3.	नौकागमने उत्पातयोगमाह	47

क्रमाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
4.	नौकापतेरनिष्टकरयोगमाह	48
5.	पुनः नौकागमने उत्पातयोगमाह	48
6.	नौकाव्यापारेऽलाभकरयोगमाह	49
7.	नौकाव्यापारे लाभकारकयोगमाह	49
8.	नौकाव्यापारे विशेषलाभयोगमाह	50

6. शत्रुगमनागमननिवृत्तिप्रश्नाध्यायः

1.	शत्रुगमनागमननिवृत्तियोगमाह	52
2.	यायिनां शुभाशुभयोगमाह	53
3.	योगान्तरमाह	54
4.	ग्रहस्थितिवशाच्छत्रोर्गमनागमनमाह	55
5.	गमागमयोगान्तरमाह	56
6.	पुनश्च योगान्तरमाह	56

7. विवाहप्रश्नाध्यायः

1.	विवाहकारकयोगमाह	58
2.	शीघ्रविवाहकारकयोगमाह	59
3.	ग्रहषड्बल	60

8. स्त्रीप्रश्नाध्यायः

1.	दम्पत्योः परस्परप्रीतियोगमाह	66
2.	ग्रहदृष्टिवशात्परस्परप्रीतियोगमाह	67
3.	दम्पत्योः कोऽधिको गुणी भवेदिति योगमाह	67
4.	स्त्रीमरणयोगमाह	68
5.	द्विभार्यायोगमाह	68
6.	प्रथमस्त्रीमरणयोगमाह	69
7.	औरसादिपुत्रयोगमाह	69
8.	जारजपुत्रयोगमाह	70
9.	योगान्तरमाह	70
10.	योगान्तरमाह	70

9. गर्भप्रश्नाध्याय

www.44Books.com

क्रमाङ्का:	विषया:	पृष्ठाङ्का:
1.	गर्भस्रावयोगमाह	72
2.	गर्भस्य कुशलकारकयोगमाह	72
3.	प्रसवकालज्ञानमाह	74
4.	योगान्तरमाह	75

10. सन्तानप्रश्नाध्याय:

1.	गर्भस्थपुत्र-पुत्रीनिर्णयमाह	76
2.	पुत्रजन्मयोगमाह	77
3.	पुनश्च पुत्र-पुत्रीनिर्णयमाह	77
4.	सन्ततिर्भविष्यति न वेति योगमाह	78
5.	योगान्तरमाह	78
6.	स्वरोदयज्ञानमाह	79
7.	पुत्रयोगमाह	79
8.	गर्भस्यानिष्टयोगमाह	80
9.	पुत्रोत्पत्तौ प्रबलयोगमाह	80
10.	सन्तानहानिकरयोगमाह	80
11.	पुन: सन्तानहानिकरयोगमाह	81

11. रोगिणो जीवनमरणप्रश्नाध्याय:

1.	रोगिणो मरणयोगमाह	82
2.	योगान्तरमाह	82
3.	पुनश्च रोगिणो मरणमाह	83
4.	मिश्रितफलमाह	83
5.	रोगनिर्णयमाह	84
6.	पुन: रोगनिर्णयमाह	84
7.	मरणामरणयोगमाह	85
8.	रोगादिबोधकभावानाह	86
9.	भूतपिशाचजनितकष्टमाह	87

12. नष्टद्रव्यप्रश्नाध्याय:

1.	चौरज्ञानमाह	88

क्रमाङ्का:	विषया:	पृष्ठाङ्का:
2.	चोरितद्रव्यस्थाननिर्णयमाह	88
3.	नष्टधनलाभयोगमाह	89
4.	योगान्तरमुच्यते	89
5.	नष्टधनस्थितिदिङ्मार्गयोर्ज्ञानमाह	90

13. वादिप्रतिवादिनोर्जयाजयप्रश्नाध्याय:

1.	वादिप्रतिवादिनोर्जयाजययोगमाह	92
2.	सन्धिविशेषविग्रहयोगमाह	93
3.	शस्त्रादिनावादीमरणयोगमाह	93
4.	जयपराजययोगमाह	94

14. दिनचर्याप्रश्नाध्याय:

1.	दैनिकशुभाशुभफलमाह	95
2.	शस्त्रजभययोगमाह	95
3.	नवग्रहाणां दिनदशामाह	96
4.	ग्रहदिनदशाफलविचार:	97

15. क्रय-विक्रयप्रश्नाध्याय:

1.	क्रयविक्रयाभ्यां लाभाऽलाभयोगमाह	99
2.	महर्घादिविचारमाह	100
3.	महर्घसमर्घयो: कालपरिमाणमाह	100
4.	लग्नबलमाह	101
5.	धान्यानामधिपा:	101

16. द्रेष्काणप्रश्नाध्याय:

1.	रोगिणो मरणयोगमाह	104
2.	रोगिण: मरणाभावयोगमाह	104
3.	पुन: रोगिण: मृत्युयोगमाह	104
4.	लाभयोगमाह	105
5.	पुत्रलाभयोगमाह	105
6.	सकलभावविचारमाह	106

www.44Books.com

क्रमाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
7.	फलोपसंहृतिमाह	106
8.	ग्रन्थोपसंहारः	107
9.	टीकासमाप्तिकालकथनम्	107

चक्रानुक्रमणिका

1.	राशियाँ एवं उनके स्वामियों का चक्र	5
2.	फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र	18
3.	प्रचलित मत से षड्वर्गों के चक्र	20
4.	शुद्धत्रिंशांशचक्र	20
5.	मूकप्रश्नज्ञानार्थ नवांशज्ञानचक्र	32
6.	स्वांश (स्वनवांश) ज्ञानार्थ चक्र	32
7.	ग्रहबलसारिणी	63
8.	ग्रहदृष्टि-साधन सारिणी	64
9.	रोगादिबोधक चक्र	87
10.	दैनिकदशाफलविचारचक्रम्	98
	परीक्षोपयोगिप्रश्नाः	108
	वस्तुनिष्ठप्रश्नाः	122
	श्लोकानुक्रमणिका	131

upayogibooks.com

।। श्रीः।।

दैवज्ञजीवनाथझाप्रणीतं

प्रश्नभूषणम्

प्रेक्षा-सौम्यासंस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम्

अथ सञ्ज्ञाध्यायः

जगत्पद्मं भानावुदयमुपयाते क्षितितले
श्रिया साकं प्रीत्या विकसति समन्तादरमिदम् ।
प्रवर्त्तन्ते यज्ञा दिवि दिविषदो यान्ति परमं
विनोदत्वं यस्मिन् स दिशतु पटुत्वं दिनमणिः ।।1।।

* टीकाकारकृतमङ्गलाचरणम् *

श्रीगणेशं प्रणम्यादौ अम्बिकाञ्च सदाशिवम् ।
भास्करं च गुरुं विष्णुं प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।
प्रश्नभूषणग्रन्थस्य प्रेक्षाटीका तु संस्कृते ।
हिन्दीटीका तथा सौम्या गुरुप्रसादेन लिख्यते ।।
श्रीनवनीतदासस्य अनुरोधाद् विशेषतः ।
छात्राणामुपकारार्थं अध्ययने तुष्टिप्रदा ।।
ह्रस्वा दीर्घा वस्तुनिष्ठा साफल्यदायका तथा ।
छात्रोपयोगिनः प्रश्नाः अध्यायान्ते तु लिख्यते ।।

अन्वयः– क्षितितले यस्मिन् भानौ उदयमुपयाते, इदं जगत्पद्मं प्रीत्या श्रिया साकं समन्तात् अरं विकसति, यज्ञाः प्रवर्त्तन्ते दिवि दिविषदः परमं विनोदत्वं यान्ति, सः दिनमणिः पटुत्वं दिशतु ॥1॥

प्रेक्षा– क्षितितले = पृथिव्यां, यस्मिन्, भानौ = दिनेशे, उदयमुपयाते = समुदिते सति, इदम् = अग्रेस्थितम्, जगत्पद्मं = विश्वकमलं, प्रीत्या = स्नेहेन, श्रिया

www.44Books.com

= शोभया, साकं = समेतम्, समन्तात् = परितः, अरं = सत्वरं, विकसति = प्रफुल्लतां प्राप्नोति, यज्ञाः = मखाः, प्रवर्त्तन्ते = उत्पद्यन्ते, दिवि = स्वर्गे, दिविषदः = देवगणाः, परमं विनोदत्वं = परमानन्दं, यान्ति = प्राप्नुवन्ति, सः दिनमणिः = दिवाकरः, पटुत्वं = ग्रन्थलेखननैपुण्यं, दिशतु = प्रकटयतु ॥1॥

सौम्या– जिन भास्कर भगवान् के पृथ्वी के पूर्वी क्षितिज पर उदय होने पर यह संसाररूपी कमल प्रसन्न होकर अपनी छटा को बिखेरता हुआ शीघ्र ही प्रफुल्लित हो जाता है तथा श्रौत-स्मार्त्तविधि के यज्ञादि कार्य प्रारम्भ होने लगते हैं; ऐसे वे विश्व के सुखदायक सविता (सूर्य) मुझे (जीवनाथ झा को) ग्रन्थरचना का कौशल प्रदान करें ॥1॥

कर्त्तव्यतायां हेतुमाह

निबन्धं प्रश्नतन्त्राणामधिगम्य पितुर्मुहुः ।
दैवज्ञानां विनोदाय क्रियते प्रश्नभूषणम् ॥2॥

अन्वयः– प्रश्नतन्त्राणां निबन्धं पितुः मुहुः अधिगम्य दैवज्ञानां विनोदाय प्रश्नभूषणं क्रियते ॥2॥

प्रेक्षा– प्रश्नतन्त्राणां = प्रश्नशास्त्रविषयकविभागानां, निबन्धं = ग्रन्थं, पितुः = पितुर्मुखात्, मुहुः = पुनः-पुनः, अधिगम्य = सम्यगधीत्य, दैवज्ञानां = ज्योतिषशास्त्रज्ञानां, विनोदाय = तोषाय, प्रश्नभूषणं = प्रश्नभूषणनामकं ग्रन्थं, क्रियते = लिख्यते ॥2॥

सौम्या– ज्योतिष शास्त्र के 'होरा' स्कन्ध के अन्तर्गत प्रश्नविभागविषयक ज्ञान को अपने पिता (श्री शम्भुनाथ दैवज्ञ) से बार-बार भली-भाँति समझकर, ज्योतिषियों की सुगमता और सन्तुष्टि के लिये इस 'प्रश्नभूषण' नामक ग्रन्थ की रचना की जा रही है ॥2॥

विशेष– भारतीय ज्योतिष के तीन प्रधान स्तम्भ हैं– सिद्धान्त, संहिता और होरा । प्रश्नोत्तरविषयक विभाग ज्योतिष के होरा स्कन्ध के अधीन है । उक्त श्लोक से ज्ञात होता है कि होरा स्कन्ध का समुचित अध्ययन ग्रन्थकार ने घर पर ही पिता के समीप रहकर किया था ॥

दैवज्ञलक्षणमाह

द्विविध-गणितविद्या-तत्त्वनैपुण्ययुक्तो
बहुविधविषयाणां चातुरीणां धुरीणः ।

गुरु-चरण-सरोज-ध्यान-योगानुरक्तो
भवति यदि तदाऽसौ प्रश्नविद्याप्रवीणः ॥3॥

अन्वयः– यदि द्विविधगणितविद्यातत्त्वनैपुण्ययुक्तः बहुविधविषयाणां चातुरीणां धुरीणः गुरुचरणसरोजध्यानयोगानुरक्तः तदा असौ प्रश्नविद्याप्रवीणः भवति ॥3॥

प्रेक्षा– द्विविधगणितविद्या = व्यक्ताव्यक्तगणितविद्या, तत्त्वनैपुण्ययुक्तः = विषयकौशलयुक्तः, बहुविधविषयाणां = अनेकविषयाणां, चातुरीणां = दक्षतानां, धुरीणः = कोविदः, तथाच– गुरुचरणसरोजध्यानयोगानुरक्तः = गुरुचरणकमलाराधन-संलग्नः, यदि दैवज्ञः = ज्योतिषशास्त्रज्ञः भवेत्, तदा = तर्हि, असौ = सः ज्योति-र्विदः, प्रश्नविद्याप्रवीणः = प्रश्नशास्त्रनिपुणः, भवति = सक्षमः भवति ॥3॥

सौम्या– यदि व्यक्त और अव्यक्त– उभय प्रकार के गणितों में निपुण, अनेक शास्त्रों में अबाध गति से युक्त तथा अपने गुरु (उपदेष्टा) के चरणकमलों में श्रद्धा रखने वाला ज्योतिषी हो तो वह अवश्य ही प्रश्नशास्त्र में समर्थ हो जाता है ॥3॥

विशेष– प्रश्नशास्त्र (Horary Astrology) के ज्ञाता के लिये अंकगणित और बीजगणित की जानकारी भी आवश्यक है । इसके अतिरिक्त अन्य शास्त्रों के अध्ययन और गुरु के प्रति विनय प्रदर्शित करने और हार्दिक सम्मान देने से ही दैवज्ञ को इस विद्या में निपुणता प्राप्त हो जाती है ॥

प्रश्नकर्त्तुर्लक्षणमाह

शान्तो विवेकी शुद्धात्मा हिरण्यमणिसत्फलैः ।
दैवज्ञं प्रेमभावेन सम्पूज्यार्थं निवेदयेत् ॥4॥

अन्वयः– (प्राश्निकः) शान्तः विवेकी शुद्धात्मा हिरण्यमणिसत्फलैः प्रेमभावेन दैवज्ञं सम्पूज्य अर्थं निवेदयेत् ॥4॥

प्रेक्षा– शान्तः = स्वस्थचित्तः, विवेकी = विचारवान्, शुद्धात्मा = कपटरहितः, हिरण्यमणिसत्फलैः = स्वर्णरत्ननारिकेलादिमधुरफलैः, प्रेमभावेन = स्नेहभावेन, दैवज्ञं = ज्योतिर्विदं, सम्पूज्य = सम्यक् रूपेण दक्षिणादिभिः सत्कृत्य, अर्थं = स्वमनोगतं, निवेदयेत् = वदेत् ॥4॥

सौम्या– प्रश्नकर्त्ता को स्वस्थ, शान्त, स्थिर चित्त वाला, विचारवान् तथा कपटरहित (छलरहित) होना चाहिये । उसे उपलब्ध मंगलसूचक श्रेष्ठ फल (केला, नारियल या अन्य ऋतुफल) आदि के साथ दक्षिणा लेकर नम्रतापूर्ण शब्दों से दैवज्ञ का पूजन कर अपना प्रश्न पूछना चाहिये ॥4॥

www.44Books.com

द्वादशभावानां संज्ञाकथनम्

तनु-कोश-सहोदर-बन्धुसुतो
रिपुकामविनाशशुभा विबुधैः ।
पितृभं तत आप्तिरपाय इमे
क्रमतः कथिता मिहिरप्रमुखैः ।।5।।

अन्वयः– मिहिरप्रमुखैः तनुः 1 कोशः 2 सहोदरः 3 बन्धुः 4 सुतः 5 रिपुः 6 कामः 7 विनाशः 8 शुभं 9 पितृभं 10 आप्तिः 11 अपायः 12 इमे (द्वादशभावाः) क्रमतः कथिताः ।।5।।

प्रेक्षा– वराहमिहिरादिपूर्वाचार्यैः तनुः = लग्नम् (प्रथमम्), कोशः = द्रव्यः (द्वितीयः), सहोदरः = सहजः (तृतीयः), बन्धुः = मित्रम् (चतुर्थः), सुतः = आत्मजः (पञ्चमः), रिपुः = शत्रुः (षष्ठः), कामः = दाम्पत्यः (सप्तमः), विनाशः = निधनः (अष्टमः), शुभं = पुण्यं (नवमः), पितृभं = कर्म (दशमः), आप्तिः = प्राप्तिः (एकादश), अपायः = व्ययः (द्वादश), क्रमतः = क्रमेण द्वादशभावाः स्वग्रन्थेषु वर्णिताः ।।5।।

सौम्या– प्रथम भाव 'तनु', द्वितीय भाव 'कोश', तृतीय 'सहोदर', चतुर्थ 'बन्धु', पञ्चम 'पुत्र', षष्ठ 'शत्रु', सप्तम 'काम', अष्टम 'निधन', नवम 'शुभ', दशम 'कर्म', एकादश 'लाभ' तथा द्वादश भाव 'व्यय' कहलाता है। आचार्य वराहमिहिर आदि आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में भावों की यही संज्ञायें कही हैं ।।5।।

विशेष– यहाँ पर 'मिहिरप्रमुखैः' वाक्यांश का प्रयोग आचार्य जीवनाथ झा ने साभिप्राय किया है। ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्त्तकों में दो प्रकार के आचार्य हैं। एक वे, जो ऋषि की कोटि में आते हैं और दूसरे वे, जो मनुष्य की कोटि में आते हैं। पराशर, गौतम, बृहस्पति, नारद, गर्ग आदि आचार्य ऋषिकोटि के आचार्य हैं तथा वराहमिहिर, सत्याचार्य, कल्याणवर्मा, वैद्यनाथ दीक्षित, मन्त्रेश्वर आदि मनुष्यकोटि के आचार्य हैं। ऋषिकोटि के आचार्यों ने फलकथन के लिये सत्ताइस नक्षत्रों तथा जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम आदि नव ताराओं एवं स्वरविज्ञान आदि को प्रमुखता दी है। मनुष्यकोटि के ज्योतिषाचार्यों में वराहमिहिर ही मूर्धन्य गिने जाते हैं। इस श्रेणी के आचार्यों ने द्वादश भावों एवं राशियों के विचार को फलकथन में वरीयता प्रदान की है; इसलिये ग्रन्थकार ने 'मिहिरप्रमुखैः' शब्द का प्रयोग किया है ।।

मेषादिद्वादशराशीनामधिपाः

मङ्गलशुक्रबुधाः विधुभानू सौम्यकवौ कुजदेवगुरू च ।
भानुजमन्दपुरन्दरवन्द्याः मेषभतः क्रमतः पतयस्ते ।।6।।

अन्वयः– मङ्गल-शुक्र-बुधाः विधु-भानू सौम्य-कवौ कुज-देव-गुरू भानुज-मन्द-पुरन्दरवन्द्याः मेषभतः क्रमतः ते पतयः भवन्ति ।।6।।

प्रेक्षा– मङ्गलः = भौमः, शुक्रः = सितः, बुधः = बोधनः, विधुः = चन्द्रः, भानुः = रविः, सौम्यः = चन्द्रपुत्रः, कविः = शुक्रः, कुजः = भौमः, देवगुरुः = बृहस्पतिः, भानुजः = शनिः, मन्दः = शनिः (मन्दं चरतीति), पुरन्दरवन्द्यः = बृहस्पतिः, मेषभतः = मेषराशितः, क्रमतः = क्रमेण क्रमाद्वा, ते = ग्रहाः, पतयः = स्वामिनः भवन्ति ।।6।।

सौम्या– शनि-शनि और गुरु– ये ग्रह क्रमः मेषादि द्वादश राशियों के स्वामी कहे गये हैं। सूर्य और चन्द्र एक-एक राशि के स्वामी तथा अन्य पाँचों ग्रह दो दो राशि के स्वामी हैं ।। 6 ।।

राशियाँ एवं उनके स्वामियों का चक्र

राशि	स्वामि	Sign	Lord
मेष	भौम	Aries	Mars
वृष	शुक्र	Taurus	Venus
मिथुन	बुध	Gemini	Mercury
कर्क	चन्द्र	Cancer	Moon
सिंह	सूर्य	Leo	Sun
कन्या	बुध	Virgo	Mercury
तुला	शुक्र	Libra	Venus
वृश्चिक	भौम	Scorpio	Mars
धनु	गुरु	Sagittarius	Jupiter
मकर	शनि	Capricorn	Saturn
कुम्भ	शनि	Aquarius	Saturn
मीन	गुरु	Psisces	Jupiter

www.44Books.com

लग्नात्किं विचिन्त्यमित्याह

स्वरूपलक्षणं चापि वर्णभेदं सुखासुखम् ।
प्रश्नकर्त्तुर्वयोमानं लग्नात्सर्वं विचिन्तयेत् ।।7।।

अन्वयः– प्रश्नकर्त्तुः स्वरूपलक्षणं वर्णभेदं सुखासुखं वयोमानं लग्नात् सर्वं विचिन्तयेत् ।।7।।

प्रेक्षा– प्रश्नकर्त्तुः = पृच्छकस्य, स्वरूपलक्षणम् = आकृतिलक्षणम्, वर्णभेदं = गौरश्यामः,. श्वेतः रक्तः इति शारीररंगप्रभेदं, सुखासुखं = सुखदुःखं, वयोमानं = अवस्थामानम् अर्थात् बालं युवकं प्रौढं वृद्धं इति विचारणम्, लग्नात् = प्रथमभावात्, सर्वं = सम्पूर्णं, विचिन्तयेत् = विचारयेत् इत्यर्थः ।।7।।

सौम्या– लग्न– यह प्रथम भाव है। इससे प्रश्नकर्त्ता के मुख की आकृति, शरीर की बनावट, रंग-रूप, बाल्य-वृद्ध आदि अवस्थायें तथा सुख-दुःख का विचार करना चाहिये ।।7।।

विशेष– लग्न एक प्रमुख भाव है। इसलिये इससे प्रश्न से सम्बद्ध सभी तथ्यों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। प्रश्न का शुभाशुभ फल, लग्न तथा लग्नेश– इन दोनों की शुभता-अशुभता पर ही बहुत कुछ निर्भर करता है ।।

धनभावात्किं विचिन्त्यमित्याह

रत्नकाञ्चनमुक्तानां लाभालाभौ विचक्षणः ।
धातूनाञ्च धनस्थानाच्चिन्तयेत् क्रयविक्रयौ ।।8।।

अन्वयः– विचक्षणः रत्नकाञ्चनमुक्तानां धातूनाञ्च लाभालाभौ क्रयविक्रयौ धनस्थानात् चिन्तयेत् ।।8।।

प्रेक्षा– विचक्षणः = ज्योतिषशास्त्रनिपुणः, रत्नकाञ्चनमुक्तानां = माणिक्य-मौक्तिक-प्रवाल-मरकत-पुष्पराग-हीरक-नीलम-गोमेद-वैदूर्यप्रभृतिरत्नानां उपरत्नानाञ्च, धातूनां = स्वर्णरजतताम्रयशदनागवङ्गलौहकांस्यपित्तलेत्यादिधातूनां गैरिकाद्युपधातूनां च, लाभालाभौ = प्राप्तिः हानिश्च, क्रयविक्रयौ = क्रयविक्रयात् लाभहानिः, धनस्थानात् = द्वितीयभावात्, चिन्तयेत् = विचारयेत् ।।8।।

सौम्या– रत्न, उपरत्न, स्वर्ण-रजत आदि धातुयें, इनके क्रय-विग्रय से उत्पन्न लाभ-हानि– इन सबका विचार ज्योतिषी को धनभाव अर्थात् द्वितीय भाव से करना चाहिये ।।8।।

विशेष– द्वितीय भाव कमाये हुये धन को जमा करने का भाव होता है। इसलिये इस भाव से प्रश्नकर्त्ता के पास जमा धनराशि, जो नकद में अथवा स्वर्णादि के रूप में हो अथवा निक्षेप (Bank deposit) के रूप में हो– इन सबका विचार द्वितीय भाव से किया जाता है। इसी के साथ यह भाव वाणी का भी है, अतः प्रश्नकर्त्ता की भाषणशक्ति, वार्तालाप-कुशलता, ज्ञान-कुशलता और बौद्धिक क्षमता भी इसी भाव से सम्बन्धित होती है। इसलिये इनसे सम्बन्धित विषयों पर जब प्रश्न किया जाय तो उसमें द्वितीय भाव की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है ।।

तृतीयभावाच्चिन्तनीयविषया उच्यन्ते

पराक्रमं सहोत्थानां सुखं साहसकर्मणाम् ।
दासानां च भगिन्यादेस्तृतीयात्परिचिन्तयेत् ।।9।।

अन्वयः– पराक्रमं सहोत्थानां सुखं साहसकर्मणां दासानां भगिन्यादेः च तृतीयात् परिचिन्तयेत् ।।9।।

प्रेक्षा– पराक्रमं = शौर्यं तेजस्विता च, सहोत्थानां = एकोदराणां, सुखं = आनन्दं, साहसकर्मणां = प्रगल्भकृत्यानां (धाष्ट्यादिकं), दासानां = भृत्यानां, भगिन्यादेश्च = अनुजाग्रजायाश्च, तृतीयात् = तृतीयभवनात्, परिचिन्तयेत् = परिकल्पयेत् ।।9।।

विशेषः– पञ्चमभावः अपत्यस्य (पुत्रस्य) भावः अस्ति। अतो पञ्चमात् पञ्चमं-नवमः, अतो नवमः भावः पुत्रपुत्रस्य अर्थात् पौत्रस्य भावः भवतीति। पौत्रभावात् अर्थात् नवमात् सप्तमः (तृतीयः) प्रश्नकुण्डल्याम् पौत्रवध्वा स्थानं भवति, अतो तृतीयस्थानात् पौत्रस्य पत्न्याः विचारमपि करणीयम् ।।9।।

सौम्या– तृतीय भाव से प्रश्नकर्त्ता अथवा सम्बन्धित व्यक्ति के पराक्रम (शौर्य, धैर्य, ढ़ीठता, दृढ़ता आदि), भाई-बहिन– इनसे सम्बन्धित सुख, साहस, दुस्साहस एवं भृत्यों (नौकर-चाकरों) के सुख आदि का विचार करना चाहिये ।।9।।

विशेष– तृतीय भाव से साढ़ू (पत्नी की बहन का पति) का विचार भी किया जाता है; क्योंकि लग्न से सप्तम भाव पत्नी का होता है और सप्तम से तृतीय (नवम) भाव पत्नी के सहोदरों का होता है। इसलिये पत्नी के भाई तथा बहिनों का विचार भी नवम भाव से ही करना चाहिये। इसी प्रकार पत्नी की भाभी तथा पत्नी के बहनोई (जीजा) का विचार भी तृतीय भाव से ही विचारणीय होता है ।।

www.44Books.com

सुखभावाद्विचारणीयविषयाः

मित्रालयग्रामलाभो वाहनानां सुखं सुखात् ।
मातापित्रोः सुखं क्षेत्रवाटिकादि सुखं तथा ।।10।।

अन्वयः– सुखात् मित्रालयग्रामलाभः वाहनानां सुखं मातापित्रोः सुखं तथा क्षेत्रवाटिकादिसुखं (जानीयात्) ।।10।।

प्रेक्षा– सुखात् = चतुर्थभावात्, मित्रं = सुहृदः, शुभचिन्तकादयः; आलयः = गृहं, आवासभूतभवनादयः, ग्रामलाभः– ग्रामस्य = पुरस्य, लाभः = प्राप्तिः (वर्तमानसमये ग्रामप्रधान-पुरप्रधान-नगरपालिकाध्यक्ष-महापौर-सरपञ्चप्रभृतिपदानां प्राप्तिः), वाहनानां सुखं = यानानामानन्दं, मातापित्रोः सुखं = जननीजनकस्य धातृपालकस्य वा सुखं, अभिभावकानां सुखं वा, क्षेत्रवाटिकादिसुखं = भूमिः, भूखण्डः, कृषिभूमिः, उद्यानादीनां च सुखं जानीयात् ।।10।।

सौम्या– चतुर्थ भाव अनेकविध सुखों का भाव है । इससे मित्रों एवं शुभ-चिन्तकों का सुख, आवास एवं उद्योगों के लिये भवन, दुकान, औद्योगिक परिक्षेत्र (Industrial area) आदि में उद्योगहेतु स्थान (Shade) आदि की प्राप्ति, ग्राम, नगर एवं महानगर में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में निर्वाचन द्वारा पदों की प्राप्ति, सभी प्रकार के वाहनों का सुख, माता-पिता तथा अभिभावकों (संरक्षकों) का सुख एवं कृषि, बाग-बगीचे आदि का सुख विचार करना चाहिये ।।10।।

विशेष– इस भाव से ही श्वसुर का भी विचार किया जाता है; क्योंकि पत्नी के स्थान से दसवाँ (पिता का स्थान) होता है । इसी प्रकार स्त्री के श्वसुर का विचार भी इसी भाव से होगा; क्योंकि स्त्री की कुण्डली में यह पतिभाव से दशम होता है ।।

पञ्चमभावात्किं विचारणीयमित्याह

गर्भापत्यनयानां वै मन्त्रसन्धानयोस्तथा ।
बुद्धिप्रधानशास्त्राणां विचारः पञ्चमालयात् ।।11।।

अन्वयः– पञ्चमालयात् गर्भापत्यनयानां (विचारः) तथा मन्त्रसन्धानयोः बुद्धिप्रधानशास्त्राणां वै विचारः (कुर्यात्) ।।11।।

प्रेक्षा– पञ्चमालयात् = पञ्चम(सुत)भावात्, गर्भापत्यनयानां– गर्भाणां, अपत्यानां = सन्ततीनां, नयानां = नीतीनां च, तथा = तथैव, मन्त्रसन्धानयोः = मन्त्रणा-परामर्शादिग्रहणम्, अनयोः, बुद्धिप्रधानशास्त्राणां = ग्रन्थरचना-निबन्धरचना-काव्यरचनेत्यादीनां, वै = निश्चयेन, विचारः (कर्त्तव्यः) ।।11।।

सौम्या– गर्भधारण, पुत्र-पुत्रियाँ, नीतिशास्त्र (Ethics), राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परामर्श, पुस्तकलेखन, लेख-निबन्ध, कविता-कहानी, नाटकादि का प्रणयन, बौद्धिक क्षमता आदि का विचार पञ्चम भाव से किया जाता है ।।11।।

विशेष– इस भाव से स्त्रीधन (पत्नी की सम्पत्ति-आय आदि) का भी विचार करना चाहिये; क्योंकि यह भाव पत्नीभाव से ग्यारहवाँ होता है । व्याकरण तथा विभिन्न भाषाओं के सीखने का विचार भी इसी भाव से होता है ।।

षष्ठभावाच्चिन्तनीयविषयानाह

मातुलानां रिपूणाञ्च महिष्याः क्रूरकर्मणाम् ।
रोगातङ्कव्रणादीनां विचारो रिपुभावतः ।।12।।

अन्वयः– रिपुभावतः मातुलानां रिपूणां महिष्याः क्रूरकर्मणां रोगातङ्कव्रणादीनां विचारः (कर्त्तव्यः) ।।12।।

प्रेक्षा– रिपुभावतः = षष्ठभावतः, मातुलानां = मातृभ्रातॄणां, रिपूणां = शत्रूणां, महिष्याः = महिष-गौ-मृगेत्यादीनां, क्रूरकर्मणां = मारणादिदुष्कृत्यानां, रोगातङ्कव्रणादीनां = रोगभयक्षतादीनां च विचारः कार्य इति ।।12।।

सौम्या– मामा, शत्रु, गाय-भैंस आदि दुधारु पशुओं, हिंसक कर्म, अपराध, चोरी-डकैती आदि दुष्कर्म, शारीरिक रोग, भय, मानसिक व्याधियाँ, चोट-आघात-घाव आदि का विचार षष्ठ भाव से किया जाता है ।।12।।

विशेष– इस श्लोक में 'रोगातङ्क' शब्द का प्रयोग किया गया है । यहाँ 'आतङ्क' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ प्रदान करता है । इस शब्द से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष– दोनों प्रकार के भयों का बोध होता है । अनेक बार भय का कोई प्रत्यक्ष कारण नहीं होता, परन्तु फिर भी व्यक्ति विशेष प्रकार के भय से पीड़ित रहता है । इस प्रकार के भय को आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने 'विभय' अथवा 'भीति' नाम दिया है । इसे ही अंग्रेजी में फोबिया (Phobia) कहते हैं, जो कि संस्कृत के ही 'विभय' शब्द का अपभ्रंश है । हिन्दी में इसे दुर्भीति भी कहा जाता है । यह सामान्य तथा असामान्य– दोनों प्रकार का होता है । असामान्य विभय में व्यक्ति का डर निराधार होता है और उसके भय का कोई उचित कारण नहीं होता । रोगी इस प्रकार के भय का कारण (Cause) नहीं जानता और न ही सामान्य व्यक्ति के समान भय के प्रति कोई प्रतिक्रिया ही व्यक्त करता है ।

www.44Books.com

जल-भीति (Hydro-phobia), उत्तुंगता-भीति (Acora-phobia) भीड़-भीति (Ochlo-phobia), संसर्गभीति (Miso-phobia), व्याधि-भीति (Patho-phobia), जन्तु-भीति (Zoo-phobia) आदि का विचार भी इस षष्ठ भाव से ही होता है ॥

सप्तमभावाच्चिन्तनीयविषयानाह

परैः समं विवादञ्च वाणिज्यं व्यसनं तथा ।
गमागमौ कलत्रञ्च चिन्तयेत्सप्तमालयात् ।।13।।

अन्वयः– सप्तमालयात् परैः समं विवादं, वाणिज्यं, व्यसनं च तथा गमागम कलत्रं च चिन्तयेत् ॥13॥

प्रेक्षा– सप्तमालयात् = सप्तमभावात्, परैः = शत्रुभिः, समं = साकं, विवा = विरोधं झकटकं च, वाणिज्यं = व्यापारं उद्योगं वा, व्यसनं = विशेषाचरण गमागमौ च = गमनागमनौ च, तथा कलत्रं = तथैव पत्नीविषयकविचारं, चिन्तये = विचारयेत् ॥13॥

सौम्या– शत्रुओं से विरोध, अनेकविध कार्यव्यापार एवं उद्योग-व्यवसायादि व्यसन (सद्व्यसन-दुर्व्यसन), आना-जाना अर्थात् प्रस्थान तथा प्रत्यावर्तन ए स्त्रीसम्बन्धी विचार भी सप्तम भाव से ही करना चाहिये ॥13॥

विशेष– इसके अतिरिक्त सप्तम स्थान से कामभावना, चौरकृत्य, भागिने (भानजा) आदि का भी विचार होता है। ग्रन्थकार द्वारा प्रयुक्त 'व्यसन' शब्द व्यापक अर्थ ग्रहण करना चाहिये। विशिष्ट प्रकार की प्रकृति– प्रवृत्ति को व्यस कहा जाता है। स्वाध्याय-सद्ग्रन्थों में निरन्तर डूबे रहना, विनम्रतापूर्वक दान दे निरन्तर लोककल्याण के कार्यों में संलग्न रहना– यह सब 'व्यसन' अर्थात् सद्व्यसन है

इसके विपरीत हिंसा, दुष्कृत्य, चोरी, चुगली, मद्यपान, दूसरों को अका कष्ट पहुँचाना, अभक्ष्य का भक्षण करना इत्यादि कार्य भी 'व्यसन' अर्थात् 'दुर्व्यस के अन्तर्गत आते हैं। उसका विचार भी सप्तम भाव से ही करना उचित है ॥

अष्टमभावाद्विचारणीयविषयानाह

रिपुसङ्ग्रामदुष्टानां मार्गस्यापि गदस्य च ।
नद्युत्तारभयानाञ्च क्षिप्रं छिद्रे विचिन्तयेत् ।।14।।

अन्वयः– रिपुसङ्ग्रामदुष्टानां मार्गस्यापि गदस्य च नद्युत्तारभयानाञ्च क्षिप्रं छिद्रे चिन्तयेत् ॥14॥

प्रेक्षा– रिपुसङ्ग्रामदुष्टानां– रिपुः = शत्रुः, सङ्ग्रामः = कलहः, दुष्टः = तस्करः आदीनां चिन्ता, मार्गस्यापि = पथस्यापि, गदस्य = रोगस्य, नद्युत्तारभयानाञ्च = उत्तरणं, भयानि, अनेकविधातङ्काः– एषां विचारः, क्षिप्रं = सत्वरं, छिद्रे = अष्टमभावे, विचिन्तयेत् = विचारयेत् ॥14॥

सौम्या– शत्रु, सङ्ग्राम अर्थात् युद्ध (लड़ाई-झगड़ा), चौर-तस्कर आदि नि; मार्ग, रोग-व्याधि, नदी पार करना, अनेक प्रकार के भय इत्यादि का चिन्तन अष्टम भाव से करना चाहिये ॥14॥

विशेष– समुद्र पार की यात्रा, चाहे वह जलयान से हो अथवा वायुयान से या संकटपूर्ण यात्राओं का विचार भी इसी भाव से होता है। गुप्त धन का विचार दैवज्ञगण इसी भाव से करते हैं ॥

नवमभवनाद्विचारणीयविषयानाह

वापीकूपतडागानां निर्माणं देवताऽऽलयम् ।
यात्रादीक्षाऽध्वकर्माणि चिन्तयेन्नवमालयात् ।।15।।

अन्वयः– नवमालयात् वापीकूपतडागानां निर्माणं देवताऽऽलयम् यात्रादीक्षाऽध्वकर्माणि चिन्तयेत् ॥15॥

प्रेक्षा– नवमालयात् = नवमभावात्, वापीकूपतडागानां = दीर्घिका-कूप-तारिणीनां, निर्माणं = शुभारम्भकरणं, देवताऽऽलयम् = सुरगृहं, यात्रा = तीर्थ-, दीक्षाऽध्वकर्माणि = दीक्षाग्रहणं, यज्ञयागादि कर्माणि (मखानि क्रतवः) वा, यत् = विचारयेत् ॥15॥

विशेषः– स्वाध्याय-राज्याभिषेक-धर्म-गुरु-श्यालक-देवर-मातृदार-भगिनी-दीनां विचारोऽपि कार्यः ॥

सौम्या– नवम भाव पुण्यभाव है; अतः इस भाव से बावड़ी, कुआँ, तालाब, प, खेचू (Hand pump) आदि का निर्माण देवमन्दिर तथा धर्मशालाओं र्माण, तीर्थयात्रा (Piligrimage), मन्त्रदीक्षा– इन सबका विचार करना ॥15॥

विशेष– पुराण-कथाश्रवण, भजन एवं भक्तिभाव, दार्शनिक एवं धार्मिक ग्रन्थों

www.44Books.com

का अध्ययन, धर्मोपदेश, कथा-प्रवचन-कीर्तन, साधु-सन्तों के भण्डारे आदि
विचार भी इसी भाव से करना चाहिये। इसी भाव से बहनोई, पत्नी का भाई, भ
की पत्नी, गुरु-पुरोहित-धर्माचार्य के पद पर नियुक्ति आदि का भी विचार करना चाहिये

दशमभावाद्विचारणीयविषयानाह

पितुः सुखं तथा राज्यं व्यापारं राजकर्म च।
पुण्यं मुद्रासुखं सर्वं चिन्तयेद्दशमालयात् ।।16।।

अन्वयः– दशमालयात् पितुः सुखं राज्यं व्यापारं राजकर्म पुण्यं तथा मुद्र
सुखं च सर्वं चिन्तयेत् ॥16॥

प्रेक्षा– दशमालयात् = दशमभावात्, पितुः सुखं = जनकसुखं, राज्यं
राज्यशासनाधिकारं, व्यापारं = व्यवसायं राजनीतिः वा, राजकर्म च = राज्ञः व
च, पुण्यं = धर्माराधनं, तथा = तथैव, मुद्रासुखं = द्रव्यसुखं, सर्वं = अखि
सम्पूर्णं वा, चिन्तयेत् = विचारयेत् ॥16॥

सौम्या– जन्म देने वाले पिता का सुख, राज्यकर्म (उच्च प्रशासनिक पद
अधिकार) की प्राप्ति, धर्मकार्य तथा धन का सुख– इन सबका विचार दशम भ
से किया जाता है ॥16॥

विशेष– शासकीय सेवाओं (Government service) के विचार त
प्रशासनिक दबदबे का विचार दशम स्थान से ही होता है। जहाँ नवम भाव से पू
जन्म के पुण्यफल, प्रारब्ध– भाग्य तथा धर्मिक प्रवृत्ति का विचार होता है, वहीं व
मान जन्म में किये गये सभी प्रकार के कर्मों का विचार प्रकृत दशम भाव से वि
जाता है ॥

लाभभावाद्विचिन्तनीयविषयानाह

कन्याकाञ्चनसस्यानां वाहनानां च लाभतः।
विद्याव्यापारवित्तानां कर्त्तव्या चिन्तना बुधैः ।।17।।

अन्वयः– बुधैः लाभतः कन्याकाञ्चनसस्यानां वाहनानां विद्याव्यापारवित्तान
चिन्तना कर्त्तव्या ॥17॥

प्रेक्षा– बुधैः = ज्योतिर्विद्भिः, लाभतः = एकादशभावात्, कन्या =
णययोग्या स्त्री, काञ्चनं = स्वर्णरौप्यादिकं, सस्यं = धान्यं एषां समेषां, वाह

= नरयानं, द्विचक्रयानं, मोटरसाइकिल-मोटरकारेत्यादीनां, विद्याव्यापारवित्तानां–
विद्या = शिक्षा, व्यापारं = उद्योगं आजीविका, वित्तं = धनं– एषां समेषां, चिन्तना
= विचारणा, कर्त्तव्या = करणीया ॥17॥

सौम्या– उत्तमा स्त्री, स्वर्णादि धातु, धान्य (Crops) वाहन, विद्या, व्यापार
(आजीविकाहेतु कर्म) और आय– इन सबका विचार एकादश भाव से किया जाता
है ॥17॥

विशेष– ग्यारहवाँ भाव लाभभाव कहलाता है। इस जन्म में किये गये कर्मों
का फल भी इसी भाव से प्राप्त होता है। जीविकोपार्जन हेतु जो कर्म किये जाते
हैं, उनसे मिलने वाला लाभ भी इसी भाव से देखा जाता है। अतः यह भाव
आमदनी का भाव है। इसी भाव से पुत्रवधू तथा दामाद का भी विचार किया जाता है ॥

व्ययभावाच्चिन्तनीयविषयानाह

विवाहत्यागभोगानां दानादिकृषिकर्मणाम्।
व्ययं व्यये निरोधञ्च रिपूणां प्रविलोकयेत् ।।18।।

अन्वयः– व्यये विवाहत्यागभोगानां दानादिकृषिकर्मणां व्ययं रिपूणां निरोधञ्च
प्रविलोकयेत् ॥18॥

प्रेक्षा– व्यये = द्वादशभावे, विवाहत्यागभोगानां– विवाहः = उद्वाहः घटस्फोटः
अधिकारत्यागं, भोगाः = ऐश्वर्याः– एषां समेषां, दानादिकृषिकर्मणां = गोभूमिस्वर्णादि-
दानानां कृषिसस्योत्पत्तिकार्याणाञ्च, व्ययं = अपायं, रिपूणां = शत्रूणां, निरोधञ्च =
अवरोधकरणञ्च, प्रविलोकयेत् = विचारयेत् ॥18॥

सौम्या– पाणिग्रहण संस्कार, त्याग, भोग, दान, कृषिकर्म, खर्च, कारावास
(Imprisonment), शत्रुओं का अवरोध आदि– ये सभी द्वादश भाव से
विचारणीय होते हैं ॥18॥

विशेष– बारहवाँ भाव व्यय का भाव होता है। कमाया हुआ धन, यश-कीर्ति,
स्वास्थ्य– इन सबका व्यय इसी भाव से देखा जाता है। कारावास का विचार भी
इसी भाव से करते हैं। इस श्लोक में 'त्याग' शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका
अर्थ बड़ा ही विस्तृत है। इसका अभिप्राय अधिकारत्याग (Abandonment)
तथा तलाक (Divorce), पृथक्करण (Separation) आदि ग्रहण करना
चाहिये। व्यय शुभकार्य में होगा अथवा अशुभ कार्य में– यह सब द्वादश भाव,

www.44Books.com

द्वादशेश द्वादश-भावस्थित ग्रह तथा द्वादश भाव पर पड़ने वाली ग्रहदृष्टि पर निर्भर करता है ।।

द्वादशभावानां फलविचारः संक्षेपेणाह

भावो हि यः स्वपतिना शुभखेचरेण
दृष्टो युतो भवति वा परिवर्द्धतेऽसौ ।
नष्टेन्दु-मङ्गल-पतङ्ग-पतङ्ग-पुत्रैः
नाशं प्रयाति किल मिश्रखगैर्विमिश्रम् ।।19।।

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते प्रश्नभूषणे
सञ्ज्ञाध्यायः प्रथमः ।।1।।

अन्वयः– हि यः भावः स्वपतिना शुभखेचरेण दृष्टः युतः वा भवति असौ भावः परिवर्द्धते । नष्टेन्दुमङ्गलपतङ्गपतङ्गपुत्रैः किल (दृष्टः युतः वा तदा) नाशं प्रयाति, मिश्रखगैः (दृष्टः युतः वा भवति तदा) विमिश्रं प्रयाति ।।19।।

प्रेक्षा– हि = ध्रुवं निश्चयेन वा, यः भावः = लग्नादि कोऽपीति भावः, स्वपतिना = स्वभावेशेन, शुभखेचरेण = सौम्यग्रहेण, दृष्टः युतः वा = अवलोकितः संयुक्तः वा, असौ = सः भावः, परिवर्द्धते = परिवर्द्धनं सम्वर्द्धनं वा प्राप्नोति, यः भावः नष्टेन्दुमङ्गलपतङ्गपतङ्गपुत्रैः = क्षीणचन्द्र-कुज-सूर्य-शनिग्रहैः (दृष्टः युतः वा भवति) असौ भावः नाशं = विनाशं, प्रयाति = प्राप्नोति, मिश्रखगैः = शुभाशुभग्रहैः (यः भावः दृष्टः युतः वा भवति तदा तस्य भावस्य फलं), विमिश्रं = शुभाशुभमिश्रितं, प्रयाति = गच्छति, जानीयादित्यर्थः ।।19।।

सौम्या– जो भाव अपने अधिपति (भावेश) और शुभग्रहों (पूर्ण चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) से युत या अवलोकित हो, वह भाव शुभ फल प्रदान करने वाला होता है। इसके विपरीत जो भाव क्षीणेन्दु, मंगल, सूर्य या शनि से युत अथवा अवलोकित होता है, वह भाव अपने फल को नष्ट कर देता है अर्थात् शुभ फल देने में समर्थ नहीं रहता। जो भाव शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों से युत या दृष्ट होता है, वह शुभ एवं अशुभ अर्थात् मिश्रित फल को देने वाला होता है ।।19।।

विशेष– पूर्ण चन्द्र का तात्पर्य है– शुक्ल पक्ष की एकादशी से कृष्ण पक्ष की पञ्चमी तक का चन्द्रमा। यह सम्पूर्ण फल देने वाला होता है। शुक्ल पक्ष की द्वितीया

से दशमी तक तथा कृष्ण पक्ष की षष्ठी से द्वादशी तक का चन्द्रमा क्षीण माना जाता है; अतः इसका फल भी मध्यम होता है, परन्तु कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदापर्यन्त चन्द्रमा मृत माना जाता है। यह सर्वथा पाप फल देने वाला होता है। बुध ग्रह यद्यपि शुभ है, परन्तु यदि वह पापग्रहों के साथ हो या पापदृष्ट हो और शुभ प्रभाव से सर्वथा रहित हो, तो वह भी शुभ फल नहीं देता।

इस प्रकार ज्योतिष के विद्यार्थियों को चन्द्र और बुध की शुभता-अशुभता का विचार ऊहापोहपूर्वक ग्रहण करना चाहिये ।।

इस प्रकार दैवज्ञजीवनाथप्रणीत प्रश्नभूषण के
संज्ञाध्यायनामक प्रथम अध्याय की आचार्य
गुरुप्रसाद गौड़कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या
पूर्णता को प्राप्त हुई ।।1।।

upayogibooks.com

www.44Books.com

अथ सर्वप्रश्नाध्यायः

नानाप्रश्नफलार्थं सामान्यग्रहविचारणामाह

तुङ्गमित्रादिकं ज्ञात्वा ग्रहाणां शयनादिकम् ।
बलाबले स्वभावञ्च प्रश्नकाले फलं वदेत् ।।1।।

अन्वयः– प्रश्नकाले ग्रहाणां तुङ्गमित्रादिकं शयनादिकं, बलाबले स्वभावञ्च ज्ञात्वा फलं वदेत् ।।1।।

प्रेक्षा– प्रश्नकाले = पृच्छासमये, ग्रहाणां = खेचराणां, तुङ्गमित्रादिकं = उच्च-मित्र-सम-शत्रुग्रहराशिस्थितिजबलं, शयनादिकं = शयन-उपवेशन-नेत्रपाणि- प्रकाश-गमन-आगमन-सभा-आगम-भोजन-नृत्यलिप्सा-कौतुक-निद्रा– एताः द्वादशा-वस्थानां बलम्, बलाबले = ग्रहाणां षड्बले, स्वभावं च = प्रकृतिं च, ज्ञात्वा = अधिगम्य, फलं = फलादेशं, वदेत् = कथयेत् ।।1।।

सौम्या– प्रश्नकाल में ग्रहों की उच्च राशि, स्वगृह, मूलत्रिकोण, नीच राशि, मित्र-शत्रु-सम, ग्रहों के छः प्रकार के बल, शयनादि अवस्थायें तथा उनकी दृष्टि आदि का विचार करके फलकथन करना चाहिये ।।1।।

ग्रहों के उच्च-नीच, शत्रु-मित्र, दृष्टि-आदि का चक्र यथास्थान द्रष्टव्य हैं ।।

शयनाद्यवस्थायें– इस श्लोक में शयनादि द्वादश अवस्थाओं का संकेत है। इनका वर्णन ग्रन्थकार श्री जीवनाथ झा ने अपने अन्य ग्रन्थ 'भावकुतूहल' में निम्न प्रकार से किया है—

प्रथमं शयनं ज्ञेयं द्वितीयमुपवेशनम् ।
नेत्रपाणिः प्रकाशश्च गमनागमने ततः ।।
समावस्था ततो ज्ञेया चागमो भोजनं तथा ।
नृत्यलिप्सा कौतुकश्च निद्रावस्था नभःसदाम् ।।

(भावकुतूहल–11/1-2)

इन बारह अवस्थाओं को जानने की विधि आचार्य द्वारा निम्न श्लोक के माध्यम से स्पष्ट की गई है–

ग्रहर्क्षसंख्या खगमाननिघ्नी खेटांशसंख्यागुणिता ग्रहाणाम् ।
निजेष्टजन्मर्क्षतनुप्रमाणैर्युताऽर्कतष्टा शयनाद्यवस्था ।।

शयनाद्यवस्था ज्ञात करने के लिये निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है–

1. ग्रहर्क्षसंख्या– प्रश्नकालीन ग्रहस्पष्ट जिस नक्षत्र में हो; अश्विन्यादि गणना से, उस नक्षत्र की संख्या को ग्रहर्क्षसंख्या कहते हैं।

2. खगमान– खग का अभिप्राय ग्रह से है। सूर्य का मान–1, चन्द्र का–2, मंगल का–3, बुध का–4, गुरु का–5, शुक्र का–6, शनि का–7, राहु का–8 तथा केतु का मान–9 होता है। ये ग्रहमान (खगमान) अंक हैं।

3. खेटांश– ग्रहस्पष्ट का जो गतांश है, वह खेटांश कहलाता है। ग्रहस्पष्ट में सदैव निरयण-गणना से खेटांश का ग्रहण करना चाहिये।

4. निजेष्ट– प्रश्नकालिक इष्ट की गत घटियाँ निजेष्ट कहलाती हैं।

5. जन्मर्क्ष– जन्मर्क्ष का तात्पर्य जन्मनक्षत्र से है। हमारी सम्मति में यहाँ प्रश्नकालीन लग्न-नक्षत्र ग्रहण करना चाहिये; क्योंकि बहुतों की जन्मकुण्डली नहीं होती, अतः उनका जन्मर्क्ष कैसे ज्ञात होगा और जातक में भी श्री जीवनाथ दैवज्ञ ने इनका उपयोग किया है, अतः वहाँ भी जन्मर्क्ष का तात्पर्य जन्मकालीन लग्न-नक्षत्र ही समझना चाहिये। यदि वहाँ चन्द्र का नक्षत्र लिया जायेगा तो चन्द्रमा की शयनाद्यवस्था निकालने के लिये इस विधि से उसका उपयोग दो बार होगा।

6. तनुप्रमाण– इस शब्द का अर्थ है– जन्मकाल में जन्मलग्न की संख्या और प्रश्नकाल में प्रश्नलग्न की संख्या। मेष लग्न की संख्या 1 तथा मीन लग्न की 12 होती है। इसी प्रकार अन्य लग्नों की भी समझनी चाहिये।

उदाहरण– मान लिया कि सूर्य तुला के 10 अंश पर है अर्थात् 6।10। 0।0 है, इसकी संख्या 1 है। तुला के 10 अंश पर होने से सूर्य स्वाती नक्षत्र में हुआ; स्वाती नक्षत्र की संख्या 15 है। उस समय वृश्चिक लग्न के 27 अंश है; अतः लग्न का नक्षत्र ज्येष्ठा है, जिसकी संख्या 18 है। इष्ट 11 घटी 30 पल है। इस प्रकार ग्रहर्क्षसंख्या–15 × खगमान–1 × खेटांश–10, इसका गुणनफल 150 हुआ।

इष्ट घटी 11 + 18 (प्रश्नकालिक लग्ननक्षत्र ज्येष्ठा + लग्नसंख्या 8; सबका योग– 37 + 150 = 187 हुआ। इसमें 12 का भाग दिया तो 187 ÷ 12 अर्थात् लब्धि 15 तथा शेष 7 बचे; अतः सातवीं अवस्था 'सभा' प्राप्त हुई। तात्पर्य यह कि सूर्य 'सभा' अवस्था में है।

www.44Books.com

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह और उनके चिह्न
3-1	3-10	3-10	3-10	3-10	3-10	0	3-10	3-10	ग्रहों की एक-पाद दृष्टि
5-9	5-9	5-9	5-9	0	5-9	5-9	5-9	5-9	दो-पाद दृष्टि
4-8	4-8	0	4-8	4-8	4-8	4-8	4-8	4-8	तीन-पाद दृष्टि
7	7	4-7-8	7	5-7-9	7	3-7-10	7	7	सम्पूर्ण दृष्टि
5-15	15	7, 8, 10,15	9-12-15	10-15 -19	9-12 -15	3,5, 15,19	9-15	9-15	नक्षत्र-दृष्टि
च.मं.गु.	र. बु.	र. चं. गु.	र. शु. रा.	र. चं. मं.	बु. श. रा.	बु. शु. रा.	बु.शु.श.	बुध	मित्र-दृष्टि
बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	×	सम-ग्रह
शु.श.रा.	रा.	बु. रा.	चन्द्रं	बुध शुक्र	र. चं.	र. च. मं	र.चं.मं.	×	शत्रु-ग्रह
दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×	बलवत्तम भाव
1-9-10	4	3-6	4-10	2-5-9-10-11	7	6-8-10 -11	×	×	कारक भाव
-	12	17	12-14	11	8-10	15	×	×	उदयास्त कालांश
मेष10	वृषभ 3	मकर 27	कन्या 15	कर्क 5	मीन 27	तुला 20	मि. 15	धनु15	उच्च राशि एवं परमोच्चांश
तु.10	वृश्चिक 3	कर्क 28	मीन 15	मकर 5	कन्या 27	मेष 20	ध.15	मि.15	नीच राशि एवं परमनीचांश
सिंह 20	वृष 4 से 30	मेष 18	कन्या 16 से 20	धनु 13	तुला 10	कु.20	कर्क	मकर	मूल त्रिकोण राशि, अंश
सिंह	कर्क	मेष वृश्चि.	मि. कन्या	ध. मी.	वृष तुला	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृह-(राशि)
9	3	6	1	11	5	12	×	×	हर्ष-स्थान
2,6,7, 10,11	6	3-6	4	2-3-6-7	4-5	1-4-5-8	1-4-5-8	×	शत्रु-राशियाँ
11	10	2-7	9-12	3-6	1-8	4-5	12	6	स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि

कृत्तिका उ.षा. उ.फा.	रोहिणी हस्त, श्रवण	मृगशिरा चित्रा, धनिष्ठा	आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती	पुनर्वसु विशाखा पूर्वा भा.	मघा पूर्वा फा.	पुष्य अनुराधा	आर्द्रा स्वाति	अश्विनी	विंशोत्तरी दशा-नक्षत्र
वर्ष 6	वर्ष 10	वर्ष 7	वर्ष 17	वर्ष 16	पू. षा. वर्ष 20	उ. भा. वर्ष 19	शत. वर्ष 18	भ. मृ. वर्ष 7	विंशोत्तरी दशावर्ष
22	24	28	32	16	25	36	42	42	ग्रहों के भाग्यो-दयकारी वर्ष
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा +
1	5-6	10	4	2-3	11-12	7	8-9	8-9	कुण्डली-भाव-दिशा
1	0-0-74	1-9	0-2	11-9	0-6	29-5	18-6	18-6	राशिचक्र-परिभ्रमण वर्ष
1माह	21 दिन	1।। माह	25 दिन	13 माह	28 दिन	30 माह	18माह	18माह	मध्यम राशि-भ्रमण-काल
13	.1	20	10	173	12	400	240	240	नक्षत्र-चार-दिन
3		5	2	43	3	100	60	60	नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन
59' $\frac{1}{4}$8"	790' $\frac{1}{4}$35"	31'-27"	59'$\frac{1}{2}$8	4'-59"	59'-8"	2'-0"	3'11"	3'-11"	मध्य दिनगति, कला, विकला
60'-4"	823' -48"	39'-1"	104'-46"	12'-22"	73'-43"	5'-27"	×	×	शीघ्र गति, कला, विकला
61	857'	46'-11"	113'-32"	14'-4"	75'-42"	7'-45"	×	×	परम शीघ्र गति (अतिचारी)
×	×	15	10	45	10	180	×	×	अतिचार-दिन (स्थूल)

इस प्रकार शयनाद्यवस्था ज्ञात करने का सूत्र यह है कि जिस ग्रह की शयनाद्यवस्था निकालनी हो, उस ग्रह की नक्षत्रसंख्या, क्रमसंख्या तथा अंशसंख्या को गुणा कर उस गुणनफल में प्रश्नकालीन इष्ट, प्रश्नलग्ननक्षत्र की संख्या तथा प्रश्नलग्न की राशिसंख्या– इन तीनों को जोड़ देना चाहिये। फिर इस योगफल में 12 का भाग देने से शेष शयनादि-संख्या होती है। अनेक आचार्य प्रश्नकालिक अथवा जन्मकालिक चन्द्रनक्षत्र की संख्या जोड़ते हैं।

षड्वर्गविचार– ग्रहों के लग्न, राशि, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश– ये षड्वर्ग हैं। इनमें सप्तमांश जोड़ देने से सप्तवर्ग कहलाते हैं।

www.44Books.com

इन षड्वर्गों में आचार्यों में मतभेद है । अस्तु, आगे षड्वर्ग की प्रचलित सारिणियाँ देकर मतान्तर से युक्त सारिणियाँ भी पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत की जा रही हैं–

आर्ष (प्राचीन ऋषियों का) मत से त्रिंशांश का चक्र जो कि विश्वपञ्चांग में दिया रहता है । इसमें एक-एक अंश का त्रिंशांश है ।

प्रचलित मत से षड्वर्गों के चक्र

❀ ◆ ❀ होरा ❀ ◆ ❀

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	15
4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	30

♠ ♠ ♠ द्रेष्काण ♠ ♠ ♠

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	10
5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	20
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	30

विषमे त्रिंशांशकाः समे त्रिंशांशकाः

अं.	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कुं.	वृ.	क.	कं.	वृ.	म.	मी.	अं.
5	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	5
10	11	11	11	11	11	11	6	6	6	6	6	6	12
18	9	9	9	9	9	9	12	12	12	12	12	12	20
25	3	3	3	3	3	3	10	10	10	10	10	10	25
30	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	30

✪ सप्तांशक 4।1।7।8।34 ✪

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अ.	
1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6	4	17
2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7	8	34
3	10	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8	12	51
4	11	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9	17	8
5	12	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	21	25
6	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11	25	42
7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12	10	0

शुद्धत्रिंशांशचक्र

अं.	मे. मि. सिं. तु. ध. कुं.	क. वृ. वृ. क. म. मी.
1	1	7
2	2	8
3	3	9
4	4	10
5	5	11
6	6	12
7	7	1
8	8	2
9	9	3
10	10	4
11	11	5
12	12	6
13	1	7
14	2	8
15	3	9
16	4	10
17	5	11
18	6	12
19	7	1
20	8	2
21	9	3
22	10	4
23	11	5
24	12	6
25	1	7
26	2	8
27	3	9
28	4	10
29	5	11
30	6	12

♠ ✻ ♠ नवमांशक ♠ ✻ ♠

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अ.	
1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	3	20
2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	6	40
3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	10	0
4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	13	20
5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	16	40
6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	20	0
7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	23	20
8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	26	40
9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	30	0

✻ ❣ ✻ द्वादशांशक ✻ ❣ ✻

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	2	30
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	5	0
3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	7	30
4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	10	0
5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	12	30
6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	15	0
7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	17	30
8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	20	0
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	22	30
10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	25	0
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	27	30
12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	30	0

द्रष्टव्य– पञ्चाङ्गों में जो प्रचलित मत से त्रिंशांश दिया जाता है, उसमें एक राशि के केवल पाँच भाग ही किए गए हैं; परन्तु उसका नाम त्रिंशाश ही कहा है, जो कि भ्रामक है; क्योंकि नारदसंहिता में 'त्रिंशांशो त्रिंशदंशकः' कहा गया है । अतः शुद्ध त्रिंशांश तो विश्वपञ्चाङ्ग में ही दिया जाता है । इसी प्रकार होरा में केवल कर्क, सिंह राशियाँ ही नहीं होतीं; अपितु सभी द्वादश राशियाँ होनी चाहिये । आगे के पृष्ठ पर आर्षमत तथा अन्य मत के होरा एवं द्रेष्काणचक्र दिये गए हैं ।

www.44Books.com

(विश्व पञ्चाङ्गमत से)

।। प्राचीन आर्षमत से होराचक्र ।।

मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशियाँ
1	3	5	7	9	11	1	3	5	7	9	11	15° तक प्रथम
2	4	6	8	10	12	2	4	6	8	10	12	30° तक द्वितीय

(होरारत्न–1।55)

।। यवनाचार्य के मत से होराचक्र ।।

मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशियाँ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	15° तक प्रथम होरा
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	30° तक द्वितीय होरा

(विश्वपञ्चाङ्गमत)

।। प्राचीन आर्षमत से द्रेष्काणचक्र ।।

मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशियाँ
1	4	7	10	1	4	7	10	1	4	7	10	10° तक प्रथम
2	5	8	11	2	5	8	11	2	5	8	11	20° तक द्वितीय
3	6	9	12	3	6	9	12	3	6	9	12	30° तक तृतीय

(होरारत्न–1।55)

।। यवनाचार्य के मत से द्रेष्काणचक्र ।।

मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशियाँ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	10° तक प्र. द्रेष्काण
12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	20° तक द्वि. द्रेष्काण
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	30° तक तृ. द्रेष्काण

(उत्तरकालामृत प्र. कां. 1।7)

।। कालिदासमत से द्रेष्काणचक्र ।।

मे.	वृष	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशियाँ
1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	10° प्र. द्रेष्काण
5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	20° द्वि. द्रेष्काण
9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	30° तृ. द्रेष्काण

कपटप्रश्नलक्षणम्

प्रश्नलग्नोपगौ चन्द्रमन्दौ यदा
वासरेशो घटे रश्मिहीनो बुधः ।
पृच्छकस्त्वागतो दुष्टभावादसौ
प्रश्नमित्थं विचिन्त्यात्र धीरो वदेत् ।।2।।

अन्वयः– यदा चन्द्रमन्दौ प्रश्नलग्नोपगौ वासरेशः घटे बुधः रश्मिहीनो (तदा) असौ पृच्छकः तु दुष्टभावात् आगतः तदा अत्र धीरः इत्थं प्रश्नं विचिन्त्य वदेत् ।।2।।

प्रेक्षा– यदा = यस्मिन् काले, चन्द्रमन्दौ = सोमशनिश्चरौ, प्रश्नलग्नोपगौ = प्रश्नकाले तनुभावगतौ, वासरेशः = सूर्यः, घटे = कुम्भराशौ, बुधः = चन्द्रपुत्रः सौम्यः वा, रश्मिहीनः = अस्तङ्गतः, असौ पृच्छकः = सः प्राश्निकः, दुष्टभावात् = दुर्भावात्, कापट्यादिदौर्गुण्याद्वा, आगतः = सम्प्राप्तः, धीरः = दैवज्ञः (धैर्ययुक्तो पण्डितः) इत्थम् = एवं, विचिन्त्य = सङ्कल्प्य, प्रश्नं वदेत् = फलं प्रकाशयेत् ।

सौम्या– यदि प्रश्नकालिक लग्न में चन्द्रमा और शनि स्थित हों तथा सूर्य कुम्भ राशि में गया हो और बुध अस्त हो या अल्प रश्मि वाला हो, तब प्रश्नकर्त्ता कपटभाव से आया है अर्थात् प्रश्नकर्त्ता कोई सरल व्यक्ति न होकर कपटी या धूर्त्त (Cunning or cheating person) व्यक्ति होता है। ऐसी स्थिति में विद्वान् ज्योतिषी को भली-भाँति विचार कर ही प्रश्नफल का निरूपण करना चाहिये ।।2।।

संक्षेपात्सकलकार्यसिद्धिसूचकयोगमाह

प्रश्नलग्नाधिपो लग्नगेहं यदा
कार्यनाथोऽपि कार्यालयं पश्यति ।
कार्यमङ्गाधिपः कार्यपोऽङ्गं तदा
सर्वथा कार्यसिद्धिर्जनानां वदेत् ।।3।।

अन्वयः– यदा प्रश्नलग्नाधिपः लग्नगेहं पश्यति, कार्यनाथोऽपि कार्यालयं पश्यति, अङ्गाधिपः कार्यं कार्यपः अङ्गं पश्यति, तदा जनानां सर्वथा कार्यसिद्धिः वदेत् ।।3।।

प्रेक्षा– यदा = यस्मिन् काले, प्रश्नलग्नाधिपः = प्रश्नलग्नेशः, लग्नगेहं = तनुभावं, प्रथमभावं वा, पश्यति = अवलोकयति, कार्यनाथोऽपि = विचारणीय-

www.44Books.com

भावाधीशोऽपि, कार्यालयं = कार्यसूचकभावं, पश्यति = दृश्यति, अङ्गनधिपः = लग्नाधिपः, कार्यं = कार्यसूचकभावं, कार्यपः = कार्यभावेश्वरः, अङ्गं = लग्नं, पश्यति = विलोकयति, तदा = तस्मिन् काले, जनानां = प्राश्निकानां, सर्वथा = सर्वप्रकारेण, कार्यसिद्धिः = साफल्यं, वदेत् = कथयेत् ॥3॥

सौम्या- जब प्रश्नलग्न का स्वामी प्रश्नलग्न को देखता हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव को देखता हो तो कार्यसिद्धि होती है अथवा प्रश्नलग्नेश कार्यभाव को देखे और कार्यभावेश प्रश्नलग्न को देखे तब भी सर्वथा कार्यसिद्धि होती है ॥3॥

विशेष- जो व्यक्ति प्रश्न पूछता है वह प्राश्निक, पृच्छक, प्रश्नकर्त्ता, प्रष्टा आदि कहलाता है तथा प्रश्नकालीन लग्न को प्रश्नलग्न, प्रश्नाङ्ग, प्रश्नतनु, प्रश्नमूर्त्ति, प्रश्नदेह आदि कहते हैं।

कार्येश- प्रश्न का जो विषय है, उसका विचार किस भाव से करना है- यह इस ग्रन्थ के प्रथम अध्याय के सातवें श्लोक से प्रारम्भ कर अट्ठारहवें श्लोक तक बताया गया है; अतः उसे वहाँ भली प्रकार समझ लेना चाहिये। प्रश्न से सम्बन्धित विषय का विचार जिस भाव से होना है, उस प्रश्न में उसी भाव के स्वामी को 'कार्येश' कहा जाता है। कार्येश को ही कार्यप, कार्यपति, कार्यभावेश, कार्यगृहेश आदि कहते हैं। जैसे कि पिता एवं राज्य का विचार दशम भाव से किया जाता है; अतः तत्कालीन प्रश्नलग्न में दशम भाव का जो स्वामी होगा, वही कार्येश कहलायेगा। इसी प्रकार विवाह के प्रश्न में सप्तमेश, भूमि के प्रश्न में चतुर्थेश एवं तीर्थयात्रादि के प्रश्न में नवमेश कार्येश होगा। आगे दो उदाहृत कुण्डलियों में उक्त उभययोग सिद्धि प्राप्ति के दिये गये हैं—

राज्यप्रश्ने कार्यसिद्धियोगः

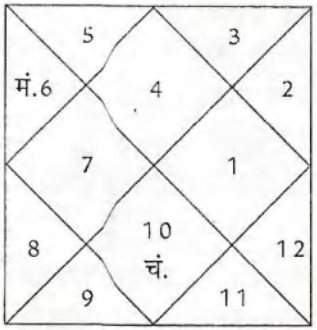

राज्यप्रश्ने कार्यसिद्धियोगः

पुनश्च कार्यसिद्धियोगमाह

चेन्मिथो वीक्षणं लग्नकार्येशयो-
रात्मभावस्थयोः कार्यसिद्धिस्तदा।
पूर्णविम्बेन चन्द्रेण दृष्टाविमौ
सत्वरं कार्यसिद्धिः प्रयासं विना ॥4॥

अन्वयः- चेत् आत्मभावस्थयोः लग्नेशकार्ययोः मिथः वीक्षणं तदा कार्यसिद्धिः इमौ पूर्णविम्बेन चन्द्रेण दृष्टौ तदा प्रयासं विना सत्वरं कार्यसिद्धिः (वाच्या) ॥4॥

प्रेक्षा- चेत् = यदि, आत्मभावस्थयोः = स्वगेहस्थयोः, लग्नेशकार्येशयोः = प्रथमभावेशस्वेच्छितकार्याश्रितभावेशयोः, मिथः = परस्परं, वीक्षणं = अवलोकनं, तदा = तस्मिन् प्रसङ्गे, कार्यसिद्धिः = अभीष्टप्राप्तिः, कथनीयेति शेषः; इमौ = लग्नेशकार्येशौ, पूर्णविम्बेन चन्द्रेण = पूर्णयुवा चन्द्रेण, दृष्टौ = अवलोकितौ, तदा = तर्हि, विना प्रयासं = अनायासेन, सत्वरं = क्षिप्रं, कार्यसिद्धिः = कार्यसाफल्यं, भविष्यतीति वाच्यं ॥4॥

सौम्या- यदि स्व-स्वराशिस्थित लग्नेश एवं कार्याधिपति परस्पर एक-दूसरे पर दृष्टिपात करते हों अथवा ये दोनों ही ग्रह पूर्ण चन्द्रमा द्वारा देखे जाते हों तो विना प्रयत्न के ही कार्यसिद्धि (वाञ्छित सफलता) होती है। यहाँ ध्यातव्य है कि लग्नेश-कार्येश की पारस्परिक दृष्टि में सप्रयास सफलता प्राप्त होती है और चन्द्र की दृष्टि से विना प्रयास ही अर्थात् अनायास ही कार्यसिद्धि होती है ॥4॥

समयनिर्णयमाह

शुभवर्गगते लग्ने सशुभे नरभोदये।
शीघ्रं तद्वच्यत्यये नैव मिश्रे कार्यं विलम्बतः ॥5॥

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते प्रश्नभूषणे
सर्वप्रश्नाध्यायः द्वितीयः ॥2॥

अन्वयः- लग्ने शुभवर्गगते सशुभे नरभोदये शीघ्रं कार्यं (वाच्यम्) तद्वच्यत्यये कार्यं नैव भवति मिश्रे विलम्बतः कार्यं (भवति) ॥5॥

प्रेक्षा- लग्ने = प्रश्नलग्ने, शुभवर्गगते = शुभग्रहषड्वर्गगते, सशुभे =

www.44Books.com

शुभग्रहयुते, नरभोदये = नृराश्युदये, शीघ्रं = सत्वरं, कार्यं = वाञ्छितं (भवति), तद्व्यत्यये = पापग्रहषड्वर्गगते, कार्यसिद्धिं नैव वाच्यं, मिश्रे = शुभाशुभलक्षणद्वयमिश्रिते प्रश्नलग्ने सति, विलम्बत: = अधिकसमयातीते, कार्यसिद्धिर्भवति ।

अस्मिन् श्लोके 'नरभोदये' पदं प्रयुक्तम् । अस्य तात्पर्यं 'नृराश्युदये' भवति । मेष-मिथुन-सिंह-तुला-चापस्य पूर्वार्द्धं घटञ्च नृराशय: कथ्यन्ते । नराकारराशय: नृ-राशय: भवन्ति । नृराशिस्थाने पुरुषराशिप्रयोग: अधिकं समीचीनं नास्ति । यतोहि 'पुरुषराशि'पदेन पुँल्लिङ्गराशिरित्यपि बोध्यते । अतो नृराशिशब्दस्य प्रयोग: समीचीनमेव प्रतिभाति ।

ग्रहाणां बालाद्यवस्था– अस्मिन्नध्याये ग्रन्थकारेण प्रथमे श्लोके 'शयनादिकं' पदेन ग्रहाणां विविधा अवस्था सूचिता । अतोऽत्र बालाद्यवस्था दीप्ताद्यवस्था च लिख्येते । यदुक्तं च भावकुतूहलस्य त्रयोदशाध्याये प्रथमद्वितीयश्लोके—

बालो रसांशैरसमे प्रदिष्टस्तत: कुमारो हि युवाऽथ वृद्ध: ।
मृत: क्रमादुत्क्रमत: समर्क्षे बालाद्यवस्था: कथिता ग्रहाणाम् ॥
फलं तु किञ्चिद्धि तनोति बालश्चार्द्धं कुमार: प्रयतेन पुंसाम् ।
युवा समग्रं खचरोऽथ वृद्ध: फलं तु दुष्टं मरणं मृताख्य: ॥

दीप्ताद्यवस्था:

उच्चे दीप्त: स्वभे स्वस्थो मित्रभे हर्षितो भवेत् ।
शान्त: शोभनवर्गस्थोऽतिशस्तो दीप्तदीधिति: ॥
लुप्तोऽस्ते नीचभे दीन: पीडित: पापशत्रुभे ।
एवमष्टौ नभोगानां भावा दीप्तादिभेदत: ॥

दीप्ताद्यवस्थानां फलं ग्रन्थकारेण 'भावकुतूहले' निम्नप्रकारेण उक्तम्—

दीप्तावस्थाफलम्

दीप्ते मदोन्मत्तगजेन्द्रगन्ता सदाऽरिहन्ता वरतीर्थगन्ता ।
कान्तो मनस्वी नितरां यशस्वी प्रदीप्तवेशो मनुजो महीप: ॥

स्वस्थावस्थाफलम्

स्वस्थे गुणागारजयालयानामुपार्जको वैरिविनाशकर्त्ता ।
नरोऽप्युदारो नृपपूजित: स्याद्विशालकीर्ति: कमनीयमूर्ति: ॥

हर्षितावस्थाफलम्

हर्षिते भवति हर्षित: सदा मित्रपुत्रपरिपूरितो मुदा ।
धर्मकृन्मणिगणेन मण्डित: पण्डित: परमदैवविज्जन: ॥

शान्तावस्थाफलम्

शान्तेतिशान्तो युवराजराजो जनो महौजा जनतासमेत: ।
अनेकविद्यामलगद्यपद्याभ्यासानुरक्त: खलु वित्तयुक्त: ॥

शस्तावस्थाफलम्

शस्ते विशेषाद्विदुषां प्रशस्त: प्रशस्तवेषो गतरोगसङ्ग: ।
विशालमालालसितोऽमलोक्त्या नरो नराणामधिप: प्रधान: ॥

लुप्तावस्थाफलम्

लुप्ते च लुप्तो गुणधर्मभावै: प्रपीडितोऽरातिकुलेन मर्त्य: ।
भवेद्विरक्तो गदजालयुक्तो प्रमादशाली खलु पापमाली ॥

दीनावस्थाफलम्

दीनेऽतिदीनो मतितोषहीनो जनो जनेशादिनिपीडितश्च ।
गुणेन हीन: परदारलीन: परार्थहारी च कुभूमिचारी ॥

पीडितावस्थाफलम्

पीडिते गदनिपीडित: सदा चिन्तया च परया समन्वित: ।
व्यग्रितो बहुमदोद्धत: पुमानाधिरोगसहितो विशेषत: ॥

इस प्रकार दैवज्ञजीवनाथप्रणीत प्रश्नभूषण के सर्वप्रश्नाध्यायनामक द्वितीय अध्याय की आचार्य गुरुप्रसाद गौड़कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई ।।2।।

www.44Books.com

अथ मौष्टिकादिप्रश्नाध्यायः

मौष्टिकादिप्रश्नविचारमाह

स्वांशगः खेचरः स्वांशमङ्गे यदा
धातुचिन्ता त्रिकोणेऽथवाऽऽलोकयेत् ।
अन्यभागस्थितो जीवचिन्ता तदा
मूलचिन्ताऽन्यभागं परांशोपगः ।।1।।

अन्वयः– यदि स्वांशगः खेचरः अङ्गे स्वांशं अथवा त्रिकोणे यदा अवलोकयेत् तदा धातुचिन्ता (भवति), अन्यभागस्थितः जीवचिन्ता, परांशोपगः अन्यभागं (अवलोकयेत्तदा) मूलचिन्ता ।।1।।

प्रेक्षा– यदि = चेत्, स्वांशगः = स्वराशिकनवमांशराशिगः, खेचरः = ग्रहः, अङ्गे = प्रथमभावे लग्ने वा, स्वांशं = स्वराशिकनवमांशराशिं पश्यति, अथवा = उत, त्रिकोणे = प्रश्नलग्नान्नवमपञ्चमे, यदाऽवलोकयेत् = पश्येत्, तदा धातुचिन्ता = धातुविशेषचिन्ता (भवति, अन्यभागस्थितः = अपरेषु ग्रहेषु भागेषु स्थितः ग्रहः, जीवचिन्ता = जीवविषयिणी शारीरिकचिन्ता (वदेत्), परांशोपगः = अन्यग्रहनवांशोपगः ग्रहः, अन्यभागं = अन्यग्रहस्थानं, यदि अवलोकयेत्तदा मूलचिन्ता कथयेत् ।।1।।

यथोक्तं भट्टोत्पलेन षट्पञ्चाशिकाटीकायां— यः कश्चिद् ग्रहस्तत्कालं स्वांशे आत्मीयनवांशे स्थितः विलग्ने प्रश्नलग्ने तत्कालोदितं स्वांशं तस्यैव ग्रहस्यात्मीयं नवांशकं तच्च पश्यत्यवलोकयति तदा प्रष्टुः धातुचिन्तां वदेत् । सुवर्णादिमृत्तिकान्तं धातुद्रव्यम् । एतदुक्तं भवति– स्वांशकस्थो ग्रहः स्वांशकयुक्तं लग्नं पश्यति तदा धातुचिन्तां प्रवदेत् । अथवा लग्नगतं स्वांशं न पश्यति तदा त्रिकोणे नवमस्थाने स्थितं तमेव स्वांशं पश्यति, पञ्चमे स्थितं तमेव स्वांशं पश्यति, नवमस्थानं पञ्चमस्थानं वा स्वांशकसमेतं पश्यतीत्यर्थः । यतो लग्नपञ्चमनवमानामेक एवांशस्तुल्यकालमुदेति । एतदुक्तं भवति– स्वनवांशकस्थो ग्रहो लग्नपञ्चमनवमानामन्यतमं स्वांशकयुक्तं पश्यति तदा धातुचिन्तां वदेत् । तत्रापि धाम्याधाम्यप्रविभागो ग्रहांशकवशाद्वाच्यः पापग्रहांशकसमवस्थितस्य धाम्यम् । सौम्यग्रहांशकसमवस्थितस्याधाम्यमिति । परांशकस्थस्तु करोति

मूलमिति । यः कश्चिद् ग्रहः परनवांशकस्थोऽन्यग्रहनवभागावस्थितो विलग्नगतं स्वांशं पश्यति त्रिकोणयोरन्यतमगतं वा तदा जीवचिन्तां वदेत् । पुरुषादिसरीसृपान्तो जीवः । तत्रापि ग्रहयुक्तनवांशकवशात् द्विपदसरीसृपादिविभागः । मिथुनकन्यातुलाधनुःपूर्वार्द्ध-कुम्भाः देवाः नराः पक्षिणश्च द्विपदा ज्ञेयाः । मेषवृषसिंहधन्विपरार्धाश्चतुष्पदाः । कर्क-वृश्चिकमकरमीनाः सरीसृपाः । तत्र मीनो ह्यपदः, अन्ये तु बहुपदाः मूलं परांशोपगतः परांशमिति । यः कश्चिद् ग्रहः परांशोपगतोऽन्यग्रहनवांशके समवस्थितो विलग्नगतं परनवांशकं त्रिकोणयोरन्यतमगतं वा पश्यति तदा मूलं करोति मूलचिन्तां वदेत् । एतत्तः प्रायः सम्भवति तद् ग्रहदर्शनाज्ज्ञेयम् । वृक्षादितृणान्तं मूलं तत्रापि ग्रहयुक्त-नवांशकवशात्स्थलजलत्वं ज्ञेयम्, कर्कमकरमीनाः जलजाः । अन्ये तु सर्वे स्थलजा इति ।।

सौम्या– इस श्लोक में नष्ट वस्तु के विषय में, मानसिक चिन्ता के विषय में तथा मुष्टिगत वस्तु के विषय में जो प्रश्न किये जाते हैं, उनके उत्तर की रीति बताई गई है । यदि प्रश्नकुण्डली में स्वनवमांशगत खेचर (ग्रह), प्रश्नलग्नस्थित स्वनवमांश राशि पर दृष्टिपात करे अथवा त्रिकोण (प्रश्नलग्न से नवम-पञ्चम) स्थित स्वनवमांश राशि को देखे तो पृच्छक को धातुचिन्ता (स्वर्ण से मृत्तिकापर्यन्त) होती है । यदि ग्रह अपने नवमांश में न बैठकर दूसरे ग्रह के नवमांश में स्थित हो और लग्न, पञ्चम, नवम स्थानों में स्वनवांश पर दृष्टिपात करता हो तो जीवचिन्ता (मनुष्य-पशु आदि) होती है । यदि ग्रह पर नवमांश में स्थित होकर लग्न, पञ्चम, नवम भावगत परनवांश को ही देखे, तो मूलचिन्ता (वृक्ष-तृण-फल-फूल आदि की चिन्ता) होती है ।।1।।

विशेष– पाठकों के लाभार्थ धातु-जीव-मूल को क्रमशः स्पष्ट किया जा रहा है—

धातु– इसके अन्तर्गत मिट्टी, पत्थर, रत्न, काँच, खनिज, भूमि-भवन, दुकान, विविध यान, मशीनें, सिक्के, आभूषण तथा रासायनिक पदार्थ आदि आते हैं । ये धाम्य और अधाम्य दो प्रकार के होते हैं । चर राशिनवांश में धाम्य धातु, स्थिर राशिनवांश में अधाम्य धातु तथा द्विस्वभाव राशि के पूर्वार्द्ध में अधाम्य धातु तथा उत्तरार्द्ध में धाम्य धातु समझना चाहिये ।

जीव– प्रश्नशास्त्र में अपद, द्विपद, चतुष्पद तथा बहुपद— ये चार प्रकार के जीव माने गये हैं । विना पैरों के जीव 'अपद' कहलाते हैं । दो पैरों वाले 'द्विपद', चार पैरों वाले 'चतुष्पद' तथा चार से अधिक पैरों वाले 'बहुपद' कहलाते हैं । द्विपद को नृपद या नृराशिनवांश भी कहते हैं । यदि लग्न या ग्रह के नवमांश में मिथुन,

upayogibooks.com

www.44Books.com

कन्या, तुला या धनु का पूर्वार्द्ध तथा कुम्भ— इनमें से कोई भी राशि हो तो प्रश्नगत जीव को द्विपद जीव कहना चाहिये। जब लग्न या ग्रह के नवमांश में मेष, वृष, सिंह तथा धनु का उत्तरार्द्ध अर्थात् चतुष्पद राशियाँ हों, तब चतुष्पद जीव समझना चाहिये। कर्क, वृश्चिक, मकर अथवा मीन राशि का नवमांश होने पर सरीसृप (Reptiles) समझना चाहिये।

मूल– वृक्ष, जड़ी-बूटियाँ, वनस्पतियाँ, गुल्म, झाड़ियाँ, घास-पात, शाक-सब्जी, उद्यानादि, वन-उपवन, हरी फसल— ये सब मूल के अन्तर्गत आते हैं। सभी प्रकार के अनाज भी मूल के अन्तर्गत ही गिने जाते हैं। यदि नवमांश में जलचर राशि हो तो जल में उत्पन्न मूल एवं थलचर राशि होने पर स्थल में उत्पन्न मूल समझना चाहिये। कर्क, वृश्चिक तथा मीन— ये जलचर राशियाँ हैं। ग्रहों के स्वांश जानने हेतु आगे दिये गये चक्र का अवलोकन करना चाहिये ॥

प्रकारान्तरेण धातुजीवमूलमाह

जीवं मूलं धातुमंशक्रमेण विज्ञायैवं युग्मभे प्रश्नकाले।
धातुं मूलं जीवमित्यादि विद्यादोजे मुष्टौ ह्रद्गतं वा विशेषात् ॥2॥

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते प्रश्नभूषणे
मौष्टिकादिप्रश्नाध्यायस्तृतीयः ॥3॥

अन्वयः– प्रश्नकाले युग्मभे अंशक्रमेण जीवं मूलं धातुं विज्ञायैवं ओजे धातुं मूलं जीवमित्यादि विशेषात् मुष्टौ ह्रद्गतं वा विद्यात् ॥2॥

प्रेक्षा– प्रश्नकाले = पृच्छासमये, युग्मभे = समराशौ, अंशक्रमेण = नवमांशक्रमेण, जीवं मूलं धातुं विज्ञाय अर्थात् प्रथमनवमांशे जीवं, द्वितीये मूलं, तृतीये धातुं, चतुर्थे जीवं, पञ्चमे मूलं, षष्ठे धातुं, सप्तमे जीवं, अष्टमे मूलं, नवमे धातुं ज्ञात्वा, एवं = इत्थं नवमांशक्रमेण, ओजे = विषमराशौ, धातुं मूलं जीवमित्यादि अर्थात् प्रथमे धातुं, द्वितीये मूलं, तृतीये जीवं इति विशेषात् = विशेषतः, मुष्टौ = अङ्गुलिबद्धकरे, ह्रद्गतं वा = मनोगतं वा, विद्यात् = जानीयात्।

मेष-मिथुन-सिंह-तुला-धनु-कुम्भाः ओजराशयः, वृष-कर्क-कन्या-वृश्चिक-मकर-मीनाः युग्मराशयः। ओजः विषमसंख्यकः, युग्मः समसंख्यकः। आंग्लभाषायां प्रयुक्तः 'ऑड' शब्दः संस्कृत-'ओज'-शब्दात् व्युत्पन्नमेव, तथैव विषमसंख्याकृते

आंग्लभाषायां 'इवेन' शब्दः प्रयुक्तः। अयं शब्दः युग्मशब्दात् व्युत्पन्नोऽस्ति। यतो हि संस्कृतभाषा विश्वस्य अखिलानां भाषानां जननी अस्ति। भारोपीयभाषायाः कल्पना मिथ्या, कपोलकल्पिता चाऽस्ति ॥2॥

सौम्या– प्रश्नकाल में यदि समराशि (वृष-कर्क-कन्या-वृश्चिक तथा मकर और मीन) का लग्न हो तो नवमांश के क्रमानुसार जीव-मूल-धातु की चिन्ता होती है अर्थात् जीव-मूल-धातु, जीव-मूल-धातु, जीव-मूल-धातु— इस क्रम से नवमांशों का फल होता है, परन्तु यदि विषम राशि (मेष-मिथुन-सिंह-तुला-धनु-कुम्भ) का लग्न हो तो उनके नवांशों में धातु-मूल और जीव की चिन्ता अनुक्रमपूर्वक होती है अर्थात् प्रथम में धातुचिन्ता, द्वितीय में मूलचिन्ता, तृतीय में जीवचिन्ता, पुनः चतुर्थ में धातुचिन्ता— इस प्रकार जानना चाहिये ॥2॥

विशेष– उक्त विषय को सरलतापूर्वक समझने के लिये आगे चक्र दिया गया है, जिसके अवलोकन से सुगमता से धातु-मूल-जीव का ज्ञान होगा। ज्योतिषी इस चक्र के माध्यम से तत्काल प्रश्न का उत्तर दे सकता है।

ओज– विषम संख्या के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है। बारह राशियों में जो विषम संख्या वाली राशियाँ हैं, वे 'ओज' राशियाँ कहलाती हैं। अंग्रेजी में इसके लिये Odd शब्द का प्रयोग होता है, जो कि संस्कृत के ओज शब्द का ही अपभ्रंश है। अंग्रेजी में यह शब्द नॉर्स (Norse) भाषा से चौदहवीं सदी में प्रविष्ट हुआ है। नॉर्स भाषा यूरोप की प्राचीन भाषाओं में गिनी जाती है।

युग्म– सम संख्या के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है। जिस संख्या में दो का भाग देने पर शून्य शेष रहे, वह संख्या 'युग्म' या 'सम' मानी जाती है। अंग्रेजी में प्रचलित शब्द Even युग्म का ही अपभ्रंश है, जो इयुग्मयो इउग्मयो इवुग्मयो इवन बना है। अंग्रेजी में Even शब्द का अर्थ समरूप भी है; अतः इसका अर्थ Equal in number amount or value भी होता है। यह दूसरे अर्थ वाला शब्द संस्कृत के 'एवं' शब्द का यूरोपीय अपभ्रंश है। इस तरह संस्कृत भाषा में दो स्वतन्त्र शब्दों ने विकृत होकर एक ही रूप धारण कर लिया है। ऑक्सफॉर्ड डिक्शनरी में दूसरे क्रमांक पर Even शब्द का ग्रहण तुल्यता के अर्थ में किया है, जो 'एवं' शब्द से व्युत्पन्न है तथा पाँचवें क्रमांक पर जो अर्थ दिया है, वह (Of a number) Divisible by two without a remainder यह है। यह अर्थ दूसरे शब्द 'युग्म' से ही निकलता है।

www.44Books.com

मूकप्रश्नज्ञानार्थ नवांशज्ञानचक्र
(अध्याय-3 श्लोक-2 के अनुसार)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	लग्नराशि	न.सं.
धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	3°-20'	1
मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	6°-40'	२
जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	10°-00''	3
धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	13°-20'	4
मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	16°-40'	5
जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	20°-00''	6
धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	23°-20'	7
मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	मूल	26°-40'	8
जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	जीव	धातु	30°-00'	9

स्वांश (स्वनवांश) ज्ञानार्थ चक्र
(अध्याय-3 श्लोक-1 के अनुसार)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	लग्नराशि	न.सं.
मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	3-20	1
शुक्र	शनि	मंगल	सूर्य	शुक्र	शनि	मंगल	सूर्य	शुक्र	शनि	मंगल	सूर्य	6-40	2
बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	10-00	3
चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	13-20	4
सूर्य	शुक्र	शनि	मंगल	सूर्य	शुक्र	शनि	मंगल	सूर्य	शुक्र	शनि	मंगल	16-40	5
बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	20-00	6
शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	शुक्र	चन्द्र	मंगल	शनि	23-20	7
मंगल	सूर्य	शुक्र	शनि	मंगल	सूर्य	शुक्र	शनि	मंगल	सूर्य	शुक्र	शनि	26-40	8
गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	30-00	9

इस चक्र में जो ग्रह जिस नवांश में बैठा है, वह उसी का नवांश है; अत: वह स्वनवांश हुआ। जैसे यदि मंगल मेष राशि के 3°-20' तक या 23°-20' से 26°-40' तक स्थित होगा, तो वह स्वनवांशगत होगा। इसी प्रकार वृषभ राशि में यदि मंगल का स्पष्ट राश्यादि 10° से 13° एवं 20 कला के मध्य होगा अथवा मिथुन में 20° से 23°-20' के मध्य होगा, तब भी वह स्वनवांशगत कहा जायेगा। इसी भाँति अन्य ग्रहों के स्वनवांश का ज्ञान इस चक्र से कर लेना चाहिये ॥

इस प्रकार दैवज्ञजीवनाथप्रणीत प्रश्नभूषण के
मौष्टिकादिप्रश्नाध्यायनामक तृतीय अध्याय
की आचार्य गुरुप्रसाद गौड़कृत संस्कृत-
हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई ।।3।।

upayogibooks.com

www.44Books.com

अथ पथिकगमनागमनप्रश्नाध्यायः

गमनागमनप्रश्नविचारः

प्रश्नतनोः सुखभे दशमे वा सौम्यखगो गमनं न हि गन्तुः ।
तत्र गता यदि पापनभोगा आगमनं न वदन्ति महान्तः ।।1।।

अन्वयः– यदि प्रश्नतनोः सुखभे वा दशमे सौम्यखगः, गन्तुः हि गमनं न (भवेत्), तत्र पापनभोगाः गता (तदा) आगमनं महान्तः न वदन्ति ।।1।।

प्रेक्षा– यदि = चेत्, प्रश्नतनोः = तनुभावात्, सुखभे = चतुर्थभावे, वा = अथवा, दशमे = दशमभावे कर्मभवने वा, सौम्यखगः = शुभखेचरः (भवेत्तदा), गन्तुः = प्रस्थितजनस्य, हि = ध्रुवेण, गमनं = यात्रा, न = नैव भवति, तत्र = प्रश्नलग्नात् चतुर्थे दशमे वा, पापनभोगाः = अशुभखेचराः, गता = विद्यमाने सति, आगमनं = प्रत्यागमनं, महान्तः = पण्डितः दैवज्ञो वा, न = नैव, वदन्ति = कथयन्ति ।।1।।

सौम्या– आवागमन से सम्बन्धित प्रश्न में यदि प्रश्नलग्न से चतुर्थ अथवा दशम भाव में शुभग्रह (पूर्ण चन्द्र, बुध, गुरु शुक्र) विद्यमान हों तो प्रश्नकर्त्ता यात्रा पर नहीं जा पाता। यदि प्रवास से प्रत्यागमन का प्रश्न हो और प्रश्नकुण्डली में चतुर्थ और दशम भवन में पापग्रह बैठे हों तो आगमन की सम्भावना नहीं होती— ऐसा श्रेष्ठ ज्योतिषी कहते हैं ।।1।।

निम्न उदाहृत कुण्डलियों से उक्त सिद्धान्त को भली-भाँति समझा जा सकता है—

गमनबाधक योग

आगमनबाधक योग

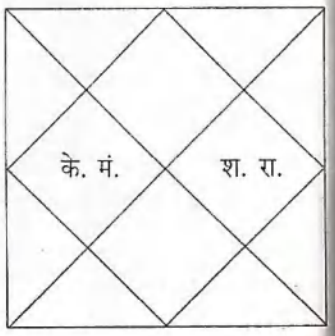

आगमनसमयमाह

चतुर्थतो वा दशमाद् द्वितीयेऽभ्येति खेचरः ।
यावता तावता धीरः पथिकागमनं वदेत् ।।2।।

अन्वयः– (प्रश्नसमये) चतुर्थतः दशमाद् द्वितीये वा खेचरः यावता अभ्येति, तावता धीरः पथिकागमनं वदेत् ।।2।।

प्रेक्षा– चतुर्थतः = प्रश्नलग्नतः चतुर्थभावात्, दशमात् = प्रश्नलग्नतः दशमभावात्, द्वितीये = चतुर्थ-दशमतः द्वितीयस्थाने (धनभावे) एकादशस्थाने वा खेचरः = ग्रहः, यावता = यावत्कालावधिपर्यन्तं, अभ्येति = गोचरे आगमिष्यति, तावता = तावत्कालावधिपर्यन्तं, धीरः = निपुणदैवज्ञः, पथिकागमनं = प्रवासिजनस्य प्रत्यावर्तनं, वदेत् = कथयेत्।

प्रश्नकाले प्रश्नकुण्डल्यां दशमभावे स्थितः बली ग्रहो गोचरभ्रमणे यदा एकादशे यास्यति तदा प्रवासी आगमिष्यति इति वक्तव्यम्। अथवा चतुर्थस्थानस्थितः (बली) ग्रहो यदा गोचरभ्रमणे पञ्चमे यास्यति तत्समये एव पथिकः आगमिष्यतीत्यभिप्रायः ।।2।।

सौम्या– प्रश्नकालिक कुण्डली में, चतुर्थ भाव में स्थित ग्रह जब अपने से द्वितीय भाव अर्थात् पञ्चम में, गोचर में भ्रमण करता हुआ जिस समय पहुँचता है, उसी समय पथिक का आगमन कहना चाहिये। इसी प्रकार दशम भाव में स्थित ग्रह जब गोचरवश अपने से द्वितीय अर्थात् एकादश भाव में पहुँचता है, तब पथिक घर वापस लौटता है —ऐसा जानना चाहिये ।।2।।

पुनश्च पथिकागमनसमयमाह

प्रश्नकाले यदा केन्द्राद् द्वितीये तारकापतिः ।
आयाति पथिकस्तत्र विना सप्तमराशिगम् ।।3।।

अन्वयः– यदा प्रश्नकाले विना सप्तमराशिगं तारकापतिः केन्द्राद् द्वितीये (आयाति, तदा) तत्र पथिकः (अपि) आयाति ।।3।।

प्रेक्षा– यदा प्रश्नकाले = यस्मिन् प्रश्नकालिकलग्ने, सप्तमस्थानं विहाय तारकापतिः चन्द्रमा केन्द्राद् = लग्नचतुर्थदशमस्थानात् द्वितीये स्थाने अर्थात् पञ्चम-एकादशभावे अपि गोचरवशेन आयाति, तदा पथिकः आगमिष्यतीति भावः। 'विना सप्तमराशिगम्' पदस्य तात्पर्यमिदं यत् अस्मिन् प्रश्ने योगे च केन्द्रस्थानेषु सप्तमस्थानं न गृहणीयम्। यतो सप्तमाद् द्वितीयस्थानं रन्ध्रस्थानं मृत्युस्थानं वा भवति, अतो मृत्युकार्थेऽरिष्टस्य सूचक इत्यभिप्रायः ।।3।।

www.44Books.com

सौम्या– प्रश्नकुण्डली में यदि चन्द्रमा सप्तम भवन को छोड़कर शेष केन्द्र-स्थानों (प्रथम, चतुर्थ, दशम) में स्थित हो, तो ऐसी स्थिति में जब वह गोचरवशात् उस केन्द्र के द्वितीय भाव में अर्थात् धन, पञ्चम या एकादश में पहुँचता है, तब पथिक का आगमन कहना चाहिये ॥3॥

विशेष– द्वितीय भाव धन का, पञ्चम भाव बुद्धि का तथा एकादश भाव आय (लाभ) का होता है। इन स्थानों में चन्द्र का गोचरभ्रमण प्रशस्त होने से पथिक सुखपूर्वक घर लौटता है।

सप्तमचन्द्रफलमाह

सप्तमस्थो यदा चन्द्रः पथिकः पथि वर्तते।
मार्गाधिपो वा राश्यर्द्धात्परतो यदि संस्थितः ॥4॥

अन्वयः– (प्रश्नसमये) यदा सप्तमस्थः चन्द्रः (भवेत्तदा) पथिकः पथि वर्तते, वा मार्गाधिपः यदि राश्यर्द्धात्परतः संस्थितः (तदा) पथिकः पथि वर्तते ॥4॥

प्रेक्षा– यदा प्रश्नचक्रे सप्तमस्थाने चन्द्रः भवति तदा पथिकः मार्गे एव वर्तते अथवा मार्गाधीश्वरः (सप्तमेशः) यदि राश्यर्द्धात् उत्तरभागे (पञ्चदशांशादधिकं) स्थितः ततोऽपि पान्थः पथि वर्तते— इत्युत्तरं दैवज्ञं वदेत् ॥4॥

सौम्या– आगमनसम्बन्धी प्रश्न में प्रश्नकुण्डली में सप्तम भावस्थ चन्द्र होने पर प्रवासी को मार्ग में स्थित समझना चाहिये अथवा सप्तमाधिपति जब राशि के उत्तरार्द्ध में (15 से 30 अंश के भीतर) स्थित हो तो भी पथिक को मध्य मार्ग में स्थित कहना चाहिये ॥4॥

पथिकस्य मार्गस्थितियोगः

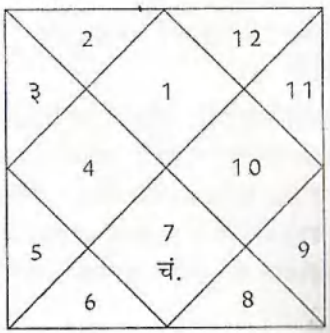

पथिकस्य मार्गस्थितियोगः

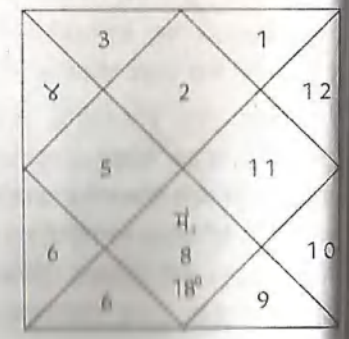

आगमने चरराशिस्थितचन्द्रफलम्

चराङ्गे चरभागेऽपि चतुर्थे यदि चन्द्रमाः।
आयाति तत्क्षणादेव प्रवासी पत्रिकाऽपि च ॥5॥

अन्वयः– (प्रश्नसमये) यदि चतुर्थे चन्द्रमा चराङ्गे चरभागेऽपि (भवेत्तदा) तत्क्षणादेव प्रवासी अपि च पत्रिका आयाति ॥5॥

प्रेक्षा– प्रश्नसमये चतुर्थे चन्द्रमा = प्रश्नलग्नाच्चतुर्थभावे चन्द्रः, चराङ्गे = चरराशिकलग्ने, चरभागेऽपि = चरराशिकनवमांशेऽपि (भवेत्तदा), तत्क्षणादेव = तत्समय एव, प्रवासी = पान्थः, अपि च = अथवा, पत्रिका = प्रवासिजनप्रेषितपत्रिका सूचना वा आयाति इति वदेत् ॥5॥

सौम्या– प्रश्नलग्न से चतुर्थ भाव में विद्यमान चन्द्र यदि चरराशि (मेष-कर्क-तुला-मकर) में अथवा चरराशि के नवमांश में हो तो उसी समय प्रवासी अथवा उसकी पत्रिका (चिट्ठी) का आगमन होता है ॥5॥

पथिकागमने चतुर्थभावफलम्

जीवो वा भार्गवो वाऽपि चन्द्रो वा सुखवेश्मनि।
पथिकं गृहमायान्तं जानीयात् प्रश्नवित्तदा ॥6॥

अन्वयः– जीवः वा भार्गवः वा चन्द्रः अपि सुखवेश्मनि (भवेत्तदा) पथिकं गृहमायान्तं प्रश्नवित् जानीयात् ॥6॥

प्रेक्षा– जीवः = बृहस्पतिः वा, भार्गवः = शुक्रः, वा = अथवा, चन्द्रः यदि सुखवेश्मनि = चतुर्थभावे भवेत्तदा, गृहमायान्तं = स्वगेहमागतं, पथिकं = प्रवासिनं, प्रश्नवित् = प्रश्नविद्यानिपुणः दैवज्ञः जानीयात् (कथयेदिति भावः) ॥6॥

सौम्या– पथिकागमन के प्रश्न में देवगुरु बृहस्पति या शुक्र अथवा चन्द्र— इनमें से कोई भी एक ग्रह यदि प्रश्नलग्न से चतुर्थ (सुख) भाव में स्थित हो, तो पथिक को घर वापस आया हुआ ही समझना चाहिये ॥6॥

विशेष– चतुर्थ भाव में स्थित सौम्यग्रह शीघ्र ही प्रवासी के आने की सूचना देते हैं। गमनसम्बन्धी प्रश्न में इसका फल विपरीत होता है अर्थात् यात्री का अन्यत्र प्रस्थान सम्भव नहीं होता ॥

www.44Books.com

गुरुशुक्रयोः फलम्

गुरुशुक्रौ द्वितीये वा तृतीये प्रश्नलग्नतः ।
तथा गृहागतं विद्यात्पथिकं नात्र संशयः ।।7।।

अन्वयः– प्रश्नलग्नतः द्वितीये वा तृतीये गुरुशुक्रौ (भवेतां) तथा पथिकं गृहागतं विद्यात् अत्र न संशयः ।।7।।

प्रेक्षा– प्रश्नलग्नात् द्वितीये (धनस्थाने) अथवा तृतीये (पराक्रमे) यदि जीव-भार्गवौ भवेताम्, तर्हि पूर्वोक्तलक्षणवत् प्रवासस्थजनं गृहे समागतं जानीयादिति भावः । अस्मिन् विषये (पथिकागमनविषये) नात्र संशयं कर्त्तव्यम् ।।7।।

सौम्या– प्रश्नलग्न से द्वितीय स्थान अथवा तृतीय स्थान में गुरु और शुक्र विद्यमान हों तो प्रवासी व्यक्ति निश्चय ही अपने घर लौटता है— इसमें कोई संशय नहीं करना चाहिये ।।7।।

विशेष– आचार्य वराहमिहिर तथा आर्यासप्तति के प्रणेता ने भी उक्त योग को स्वीकार किया है ।।

चरराशिगतग्रहफलम्

शुक्रज्ञरविमन्दानामेकोऽपि चरराशिगः ।
प्रवासी शीघ्रमायाति न च वक्री यदा तदा ।।8।।

अन्वयः– शुक्रज्ञरविमन्दानां एकोऽपि चरराशिगः (भवेत्) तदा प्रवासी शीघ्रमायाति, यदा न च वक्री ।।8।।

प्रेक्षा– भार्गवसौम्यसूर्यशनैश्चराणां, भार्गवो वा सौम्यो वा भास्करो वा सौरिर्वा यदा मेष-कर्कट-तुला-मकरराशिगः भवेत्तदा पान्थः सत्वरं गृहं समायाति इत्यर्थः । यदि उपर्युक्तग्रहाणामेकतमश्चरराशिवतो खेचरः वक्री न भवेत्तदा यथोक्तफलं वाच्यमिति भावः ।।8।।

सौम्या– प्रवासविषयक पृच्छा के अन्तर्गत प्रश्नाङ्ग में शुक्र, बुध, सूर्य और शनि— इन ग्रहों में से एक भी ग्रह यदि चरराशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला या मकर में स्थित हो तो पथिक शीघ्र ही घर वापस आ जाता है । यदि चरराशिगत ग्रह वक्री न हो, तभी उक्त फल घटित होता है; अन्यथा नहीं ।।8।।

विशेष– यहाँ इस योग में यह ध्यातव्य है कि सूर्य कभी वक्री नहीं होता; अतः सूर्य के अतिरिक्त तीन ग्रह ही यहाँ वक्रत्व हेतु विचारणीय हैं ।।

च्युत्यादिचिन्तकभावानाह

प्रश्नलग्नाच्च्युतिर्वाच्या वृद्धिस्तु सुखभावतः ।
प्रवासो दशमस्थानान्निवृत्तिः सप्तमालयात् ।।9।।

अन्वयः– प्रश्नलग्नात् च्युतिः, सुखभावतः वृद्धिः, दशमस्थानात् प्रवासः, सप्तमालयात् तु निवृत्तिः (वाच्या) ।।9।।

प्रेक्षा– प्रश्नलग्नात् = प्रश्नाङ्गस्य प्रथमभावात्, च्युतिः = स्खलनं, गृहाच्चलनं वा, सुखभावतः = प्रश्नलग्नाच्चतुर्थभावतः, वृद्धिः = यात्रायां वृद्धिः, दशमस्थानात् = कर्मभावात्, प्रवासः = परदेशवासः, सप्तमालयात् = सप्तमभावात्, निवृत्तिः = यात्रानिवृत्तिः, वाच्या = कथनीया ।।9।।

सौम्या– प्रश्नकुण्डली में प्रथम भाव अर्थात् लग्न से यात्रा (घर से चलना), चतुर्थ से यात्रावृद्धि, दशम स्थान से अन्य देश (प्रान्त या स्थान) में वास तथा सप्तम भाव से घर लौटने (वापसी) का विचार करना चाहिये ।।9।।

विशेष– 'च्युति' शब्द स्त्रीलिङ्ग है । यह 'च्यु' धातु में क्तिन् प्रत्यय जोड़ने से बनता है । इसका अर्थ— अधःपतन, विचलन, वञ्चित होना, नष्ट होना आदि है । अतः इस भाव से अधिकार का त्याग, सम्पत्ति का त्याग, स्थानान्तरण, वर्षा होना, पदहानि आदि प्रश्नों का विचार किया जाता है ।

च्युति आदि का उक्त सिद्धान्त बहुप्रशस्त एवं विख्यात है । आचार्य वराहमिहिर तथा पृथुयशा के ग्रन्थों में भी उक्त सिद्धान्त का प्राकट्य हुआ है ।।

पथिकागमनविचारः

सत्वरं चरलग्ने तु स्थिरलग्ने न सम्भवः ।
द्विःस्वभावे विलम्बेन सदसद्ग्रहयोगतः ।।10।।

अन्वयः– (प्रश्नसमये) चरलग्ने तु सत्वरं, स्थितलग्ने न सम्भवः द्विःस्वभावे सदसद्ग्रहयोगतः विलम्बेन (पथिकागमनं वक्तव्यमिति) ।।10।।

प्रेक्षा– यदा प्रश्नकाले चरलग्ने (मेष-कर्क-तुला-मकरलग्ने सति) तदा पथिकस्य शीघ्रमागमनं वदेत् । यदा प्रश्नलग्ने वृष-सिंह-वृश्चिक-कुम्भलग्ने सति एतेषां लग्नानां स्थिरत्वात् पथिकस्य आगमनं न भवति, परन्तु द्विःस्वभावलग्नेषु अर्थात् मिथुने कन्यायां धनुषि मीने वा सद्ग्रहयोगेन सरलतापूर्वकं, असद्ग्रहयोगेन च कठिनतापूर्वकमागमनं भविष्यतीति वाच्यम् ।।10।।

www.44Books.com

सौम्या– प्रश्नकुण्डली में जब चरराशियों में से किसी राशि का लग्न हो तो पथिक की घरवापसी शीघ्र ही होती है। स्थिरराशियों (वृष-सिंह-वृश्चिक-कुम्भ) का लग्न होने पर प्रवासी नहीं लौटेगा— ऐसा कहना चाहिये। प्रश्नलग्न में द्विस्वभाव राशि (3, 6, 9, 12) होने पर यदि उसमें शुभ ग्रह स्थित हो तो सुगमतापूर्वक प्रावासी का आगमन तथा पापग्रह के योग से कष्टपूर्वक आगमन (विलम्ब से भी) होता है ॥10॥

पथिकस्य मरणयोगमाह

शशाङ्कलग्नपौ षष्ठे सप्तमे वा युतौ यदि ।
अष्टमेशेन कुरुतो मरणं पथिकस्य वै ॥11॥

अन्वयः– शशाङ्कलग्नपौ यदि षष्ठे सप्तमे वा अष्टमेशेन युतौ (तदा) पथिकस्य वै मरणं कुरुतः ॥11॥

प्रेक्षा– यदा प्रश्नकुण्डल्यां चन्द्रलग्नेशौ रिपुभावे वा सप्तमभावे संस्थितौ (भवेतां) तथा अष्टमभावस्वामिना युतौ तदा पान्थस्य निश्चयेन मरणं भवेदिति वाच्यम्। अस्मिन् योगे षष्ठस्थानं रोगस्य शत्रुजनस्य च, सप्तमस्थानं मारकस्थानं भवति। अष्टमस्थानं मृत्युस्थानं मारकेशस्य, मारकस्थाने, रोगस्थाने, यात्रास्थाने लग्नेशेन चन्द्रेण सह, अष्टमेशस्य स्थितिः वधकारिणि भवति ॥11॥

सौम्या– चन्द्र और लग्नेश यदि अष्टमेश के साथ छठे या सातवें भाव में बैठे हों तो निश्चयपूर्वक पथिक की मृत्यु के सूचक होते हैं। यहाँ 'मृत्यु' शब्द से मरणतुल्य अथवा घोर कष्ट भी जानना चाहिये; क्योंकि शास्त्रों में मृत्यु आठ प्रकार की बताई गई है। 'पञ्चस्वरा' ग्रन्थ के अनुसार—

व्यथा दुःखं भयं लज्जा रोगः शोकस्तथैव च।
मरणं चापमानं च मृत्युरष्टविधः स्मृतः ॥

अर्थात् (1) व्यथा, (2) दुःख, (3) भय, (4) लज्जा, (5) रोग, (6) शोक, (7) मरण और (8) अपमान— ये मृत्यु के आठ प्रकार हैं ॥11॥

पथिकस्य कष्टयोगमाह

पृष्ठोदये यदा लग्ने सौम्यादृष्टे खलेक्षिते ।
प्रवासी दुःखसन्तप्तः पापैर्वा केन्द्रगैरपि ॥12॥

अन्वयः– यदा पृष्ठोदये लग्ने सौम्यादृष्टे खलेक्षिते प्रवासी दुःखसन्तप्तः (वाच्यः) पापैः केन्द्रगैरपि (सन्तप्तः वाच्यः) ॥12॥

प्रेक्षा– पृष्ठोदयाः मेष-कर्कट-मकर-धन्वि-मीनाः पृष्ठोदये प्रश्नलग्ने अशुभग्रहावलोकिते तस्मिंश्च पापग्रहनिरीक्षिते अथवा समस्ताः पापग्रहाः केन्द्रस्थानेषु (लग्न-चतुर्थ-सप्तम-दशमस्थानेषु) संस्थितस्तदा पथिकः दुःखसन्तप्तः भवेदिति वाच्यम् ॥12॥

सौम्या– जब प्रश्नलग्न में पृष्ठोदय राशि (मेष-कर्क-मकर-धनु-मीन-मकर में से कोई एक) हो, उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो; परन्तु पापग्रहों की दृष्टि हो तो प्रवासी को यात्रा-प्रवास में कष्ट होता है अथवा केन्द्रस्थान में पापग्रह स्थित हों, तब भी कष्ट होता है ॥12॥

पथिक-कष्टयोग

पथिक-कष्टयोग

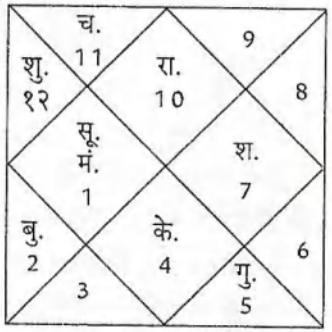

उपद्रवयोगमाह

सूर्येऽष्टमे कुजे वाऽपि पथि चौरभयं वदेत् ।
यावन्तो निधने खेटाश्चौरास्तत्सङ्ख्यकाः स्मृताः ॥13॥

अन्वयः– सूर्ये वा कुजे अष्टमे पथि चौरभयं वदेत्। निधने यावन्तः खेटाः तत्संख्यकाः चौराः स्मृताः ॥13॥

प्रेक्षा– यदा प्रश्नकुण्डल्यां सूर्ये वा कुजे अष्टमभावे संस्थिते तदा मार्गे चौरभयं वक्तव्यम्। यावन्तः खेटाः अष्टमभावे स्थितः तत्संख्यकाः चौराः मार्गे वक्तव्यम् ॥13॥

सौम्या– यदि प्रश्नलग्न से अष्टम भाव में सूर्य या मंगल स्थित हो तो पथिक को मार्ग में चोरों का भय होता है। अष्टम भाव में जितने ग्रह बैठे हों, उतनी ही संख्या के तुल्य चोरों से कष्ट जानना चाहिये ॥13॥

www.44Books.com

विशेष– आठवें भाव में यदि एक ग्रह हो तो एक चोर, दो ग्रह हों तो दो चोर, तीन ग्रह हों तो तीन चोर— इस प्रकार की संख्या का निर्णय दैवज्ञ द्वारा पृच्छक को कहना चाहिये ॥

शस्त्रभययोगमाह

सिंहे रविः शशी भौमो निधने शनिनेक्षितः ।
शस्त्रकोपं वदेत्तत्र यदि लग्ने शुभो न हि ॥14॥

अन्वयः– रविः शशी भौमः सिंहे निधने शनिना ईक्षितः तत्र शस्त्रकोपं वदेत् हि लग्ने शुभः न ॥14॥

प्रेक्षा– यदा आगमनप्रश्ने प्रश्नकुण्डल्यां अष्टमभावे सिंहराशौ रविः वा शशी वा भौमः संस्थितः भवति तथा शनैश्चरेण अवलोकितश्च, लग्ने शुभदृष्टियुतीनां अभावः सति तदा पथिककृते शस्त्रभयं वाच्यम् ॥14॥

सौम्या– जब पथिक की प्रश्नकुण्डली में अष्टम भाव में सिंह राशि में सूर्य, चन्द्र एवं मंगल स्थित हों (या इनमें से कोई एक भी हो) और वह अष्टम भाव शनि के द्वारा देखा जाता हो तथा लग्न पर किसी शुभ ग्रह की युति या दृष्टि न हो तो पथिक को शस्त्रभय होता है ॥14॥

विशेष– इस प्रकार का योग मात्र मकर लग्न में ही सम्भव होता है, जिसमें सिंह राशि अष्टम भाव में पड़ती है ॥

अर्थपूर्णयोगमाह

दशमे शुभसंयुक्ते नवमे वा विशेषतः ।
अर्थपूर्णः समायाति पथिको नात्र संशयः ॥15॥

अन्वयः– दशमे नवमे वा शुभसंयुक्ते पथिकः विशेषतः अर्थपूर्णः समायाति अत्र न संशयः ॥15॥

प्रेक्षा– यदा प्रश्नाङ्गे प्रश्नलग्नतः दशमस्थाने शुभग्रहसंस्थिते वा नवमभवे विशेषतः शुभग्रहस्थिते, तदा प्रवासिजनः असंशयरूपेण धनार्जनं कृत्वा परिपूर्णो भूत्वा गृहमायातीतिफलं वदेत् ॥15॥

सौम्या– पथिकविषयक प्रश्न में प्रश्नलग्न से दशम स्थान अथवा विशेष रू

नवम स्थान शुभ ग्रहों से युत हो तो पथिक धनादि से परिपूर्ण होकर अपने घर को लौटता है— इसमें संशय नहीं है ॥15॥

पथिकादिगमनागमनयोगमाह

प्रश्नकाले स्थिरे लग्ने स्यातां नैव गमागमौ ।
न मृतं न च नष्टं हि न रोगो न पराजयः ॥16॥

अन्वयः– प्रश्नकाले स्थिरे लग्ने गमागमौ नैव स्याताम् । न मृतं, न नष्टं, न रोगः न च पराजयः (वाच्यः) ॥16॥

प्रेक्षा– यदा प्रश्नसमये स्थिरराशीषु लग्नं भवेत् तदा गमागमौ नैव भवतः, न पथिकः आगमिष्यति, न स्वगृहात् यात्रायां गच्छति, न मरणं भवति । आतुरप्रश्ने जीवत्येव, वस्तुनः स्खलनं न वाच्यम्, युद्धे विवादे वा न पराजयः न स्वस्थः रुग्णः भवति, न च रुग्णः स्वस्थः भवति ॥16॥

सौम्या– यदि प्रश्नसमय में स्थिर लग्नों (2-5-8-11) में से कोई भी लग्न हो, तब यदि कोई पृच्छक पूछता है कि यात्रा होगी या नहीं ? तो यह कहना चाहिये कि नहीं होगी । यदि पथिक के आगमन का प्रश्न हो तो आगमन नहीं होगा— ऐसा कहना चाहिये । यदि रोगी का प्रश्न है, तो वह नहीं मरेगा, यदि नष्ट वस्तु के विषय में प्रश्न है, तो वस्तु नष्ट नहीं होगी; बल्कि अपने स्थान पर ही रहेगी— ऐसा कहना चाहिये । यदि स्वस्थ व्यक्ति ऐसा पूछता है कि मुझे या अमुक को कोई रोग है या नहीं ? तब 'रोग नहीं है' ऐसा कहना चाहिये । रोगनिवृत्ति के प्रश्न में रोग ठीक नहीं होगा— ऐसा कहना चाहिये । इसी भाँति युद्ध या मुकदमे के प्रश्न में 'पराजय नहीं होगी'— ऐसा फल कहना चाहिये ॥16॥

विशेष– आचार्य पृथुयशा ने इस विषय में निम्न श्लोक दिया है—

वृषसिंहवृश्चिकघटैर्विद्धि स्थानं गमागमौ न स्तः ।
न मृतं न चापि नष्टं न रोगशान्तिर्न चाभिभवः ॥

(षट्पञ्चाशिका-2।1)

चर-द्विस्वभावलग्नफलञ्चाह

तद्ध्यत्ययं चरे लग्ने द्विःस्वभावे तु मिश्रता ।
शुभदृष्ट्या शुभं ज्ञेयं चन्द्राद्वा व्यत्ययेऽन्यथा ॥17॥

www.44Books.com

अन्वयः– चरे लग्ने तद्व्यत्ययं द्विस्वभावे तु मिश्रता शुभदृष्ट्या शुभं चन्द्राद्वा व्यत्यये अन्यथा ज्ञेयम् ॥17॥

प्रेक्षा– प्रश्नकाले चरलग्ने सति अर्थात् मेषे कर्के तुलायां मकरे वा पूर्वोक्तश्लोकार्थस्य वैपरीत्यं वाच्यम् अर्थात् गमनादिकं ज्ञेयम्। द्विस्वभावे लग्ने मिश्रफलं ज्ञेयम्। चन्द्राद्वा = लग्नवत् चन्द्रलग्नतः प्रश्नकालिकचन्द्रकुण्डल्यां षोडशसप्तदशश्लोकानुसारेण फलं ज्ञेयम् ॥17॥

सौम्या– प्रश्नकालिक लग्न में यदि चरराशि (1-4-7-10) स्थित हो तो पूर्वोक्त फल से विपरीत अर्थात् गमन-आगमन-मरण-हानि और पराजय होती है। प्रश्नलग्न यदि द्विस्वभाव (3-6-9-12) राशि की हो तो गमनागमन में विलम्ब होता है। यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न पर हो तो शुभ फल प्राप्त होता है एवं अशुभ ग्रहों की दृष्टि से अशुभ फल तथा शुभाशुभ दोनों ग्रहों के प्रभाव से मिश्रित फल कहना चाहिये। प्रश्नलग्नकुण्डली की भाँति ही प्रश्नकालिक चन्द्रकुण्डली से भी इसी प्रकार फल का विचार करते हैं। यदि चन्द्र स्थिरराशि में हो तो पूर्व श्लोक की तरह गमनागमन आदि नहीं होते। यदि चन्द्रमा चरराशि में हो तो गमना-गमनादि होते हैं एवं यदि चन्द्र द्विस्वभाव राशि में हो तो गमागमादि में संशय रहता है। चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि से शुभ फल एवं अशुभ (पाप) ग्रहों की दृष्टि से अशुभ फल होता है ॥17॥

पथिकागमने दिनसंख्यामाह

लग्नाद्यत्प्रमिते खेटस्तेन द्वादशसङ्गुणाः।
तैरेव दिवसैर्ज्ञेयं तदागमनमादिभिः ॥18॥

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते प्रश्नभूषणे पथिक-गमनागमनप्रश्नाध्यायश्चतुर्थः ॥4॥

अन्वयः– लग्नात् यत् प्रमिते खेटः तेन द्वादशसङ्गुणाः तैरेव दिवसैः तत् आगमनं ज्ञेयमित्यादिभिः (आचार्यैरुक्तम्) ॥18॥

प्रेक्षा– प्रश्नलग्नतः यत्संख्यकराशौ गमनादियोगकारकग्रहाः तिष्ठन्ति लग्नावधिक-गमनादिकारकग्रहनिष्ठराशिमानेन द्वादशाङ्कैः सङ्गुणिताः सन्तो यावन्तो भवन्ति तत्संख्यकैरेव दिनैः पान्थस्य गमन-आगमनादिकं ज्ञेयम् ॥18॥

सौम्या– गमन-आगमनादि योगसूचक ग्रह प्रश्नलग्न से जितने संख्या वाले भाव (राशि) में स्थित हो, उसे बारह से गुणा करे; उस गुणनफल के तुल्य दिनों में गमनागमन सम्पन्न होगा— ऐसा जानना चाहिये ॥18॥

इस प्रकार दैवज्ञजीवनाथप्रणीत प्रश्नभूषण के पथिकगमनागमनप्रश्नाध्यायनामक चतुर्थ अध्याय की आचार्य गुरुप्रसाद गौड़-कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई ॥4॥

upayogibooks.com

www.44Books.com

अथ नौकागमनप्रश्नाध्यायः

नौकाप्रश्नविचारकभावमाह

कल्याणसंयुता नौका न वा कल्याणसंयुता ।
इति प्रश्नेऽष्टमस्थानं सर्वतः परिचिन्तयेत् ।।1।।

अन्वयः– नौका कल्याणसंयुता वा कल्याणसंयुता न इति प्रश्ने अष्टमस्थानं सर्वतः परिचिन्तयेत् ।।1।।

प्रेक्षा– व्यापारायगता नौका जलयानं वा, कल्याणसंयुता = जलमग्नादिभयरहिता अस्ति अथवा नास्ति, इति प्रश्ने प्रश्नलग्नादष्टमं भावं सर्वतोभावेन विचारयेत् ।

समुद्रयात्रायां, दुर्गमपथि, पन्थवैषम्ये, नद्युत्तारादिके प्रसङ्गेऽपि अष्टमभावग्रह-स्थितिवशात् फलं वाच्यम् । यथोक्तञ्च जातकाभरणे—

नद्युत्तारोऽत्यन्तवैषम्यदुर्गं शस्त्रज्ञायुः सङ्कटञ्चेति सर्वम् ।
रन्ध्रस्थाने सर्वदा चिन्तनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ।।
मानसागरीग्रन्थे 'नद्युत्तारात्पन्थवैषम्यदुर्गं' इति पाठान्तरं विद्यते ।।1।।

सौम्या– व्यापार के लिये गई हुई नौका या जलपोत के कुशलक्षेम-सम्बन्धी प्रश्न का विचार अष्टम भाव से करना चाहिये ।।1।।

विशेष– अष्टम स्थान से ज्योतिष शास्त्र में दुर्गम यात्राओं का विचार किया जाता है । व्यापारियों की नौकायें या जलयान जब नदीमार्ग या समुद्रमार्ग से जाते हैं तो चार प्रकार के प्रश्न इस विषय में पूछे जाते हैं—

क्षेमायतं वहित्रस्य मज्जनं वपनं जले ।
पण्यव्यवहृतो लाभो वाऽपि प्रश्नचतुष्टयम् ।।

अर्थात् नौका की कुशलता, नौका का जल में डूबना, नौका का टूटना-फटना और क्रय-विक्रय से लाभ— ये चार प्रकार के प्रश्न होते हैं । श्री काशीनाथ ने अपने ग्रन्थ 'प्रश्नप्रदीप' में भी नौकासम्बन्धी प्रश्न का विचार अष्टम भाव से ही करना समीचीन बताया है—

व्यापाराय गता नौका बुडिता लाभसंयुता ।
कल्याणसंयुता वेति प्रश्ने छिद्रं विचारयेत् ।।

आचार्य नीलकण्ठ भी नौकाप्रश्न को अष्टम स्थान से ही विचारणीय मानते हैं ।।

नौकाप्रश्ने शुभयोगमाह

लग्नं लग्नेश्वरः पश्येदष्टमं निधनाधिपः ।
न विघ्निता तदा नौका वर्तते कुशलात्मिका ।।2।।

अन्वयः– (यदा) लग्नेश्वरः लग्नं पश्येत्, निधनाधिपः अष्टमं (पश्येत्) तदा विघ्निता न वर्तते कुशलात्मिका ।।2।।

प्रेक्षा– यदा (यस्मिन् प्रश्नाङ्गे) लग्नाधीशः लग्नं अवलोकयति, अष्टमाधिपोऽपि अष्टमं पश्यति, तदा व्यापाराय गता नौका विघ्नरहिता वर्तते अर्थात् उपद्रवरहिता वर्तते ।।2।।

सौम्या– नौका या जलयान के विषय में प्रश्न हो और प्रश्नकुण्डली में प्रश्नलग्नेश लग्न को तथा अष्टमाधिपति अष्टम भाव को देखे तो व्यापार-हेतु गई हुई नौका सकुशल समझनी चाहिये ।।2।।

विशेष– आचार्य नीलकण्ठ के अनुसार लग्नेश का लग्न को तथा अष्टमेश का अष्टम भाव को देखना आवश्यक है; अन्यथा नौका की कुशल नहीं होती—

लग्नेशोऽष्टपतिः स्वस्वगेहं नालोकते यदि ।
तदायानेऽस्य वक्तव्यं निश्चितं मज्जनं बुधैः ।।
(नीलकण्ठी–प्रश्नतन्त्र)

नौकागमने उत्पातयोगमाह

लग्नपो वाऽष्टमेशश्च सप्तमे यदि वर्तते ।
तदोत्पातं विजानीयादरिवह्निकृतं तदा ।।3।।

अन्वयः– लग्नपो वा अष्टमेशश्च यदि सप्तमे वर्तते, तदा अरिवह्निकृतं उत्पातं विजानीयात् ।।3।।

प्रेक्षा– प्रश्नलग्नेशः अथवा अष्टमाधिपतिश्च यस्मिन् प्रश्नसमये, सप्तमभावे वर्तते, तस्मिन्नेव समये जलयानविषये शत्रुकृतमग्निकृतं वा उपद्रवं कथनीयात् ।।3।।

www.44Books.com

सौम्या– नौका के कुशलसम्बन्धी प्रश्न में यदि लग्न का स्वामी अथवा रन्ध्रस्थान (अष्टम) का स्वामी, सप्तम भाव में स्थित हो तो अग्निजनित या शत्रुजनित उपद्रव की आशङ्का होती है ॥3॥

विशेष– आचार्य नीलकण्ठ के मतानुसार लग्नेश और अष्टमेश दोनों ही यदि सप्तम में हों तो नौका जल में डूब जाती है; लेकिन नौकाधीश के प्राणों की रक्षा होती है और नौका भी घर वापिस आ जाती है ॥

नौकापतेरनिष्टकरयोगमाह

लग्नेऽष्टमे चतुर्थे वा पापो रविकरेऽङ्गपः ।
नौकापतिस्तदा रोगी मृतो वेति बुधो वदेत् ॥4॥

अन्वयः– यदि पापः लग्ने चतुर्थे वा अष्टमे (भवेत्) अपि च अङ्गपः रविकरे (भवेत्) तदा नौकापतिः रोगी मृतः वा इति बुधः वदेत् ॥4॥

प्रेक्षा– यदि पापग्रहाः (भौमशनिराहवः) तनुभावे, सुखभावे निधनभावे वा भवेयुः अथवा लग्नाधिपः सूर्यकिरणान्तर्गते (अस्तङ्गतो) भवेत् तदा नौकाधीशः आतुरो मृतो वाऽस्तीति दैवज्ञः कथयेत् ॥4॥

सौम्या– यदि पापग्रह (एक या अधिक) लग्न, चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में स्थित हो अथवा प्रश्नलग्न का स्वामी अल्प रश्मियों वाला हो अर्थात् अस्तंगत हो तो नौका का स्वामी व्याधिग्रस्त या मृत हो चुका है— ऐसा फल ज्योतिषी को बताना चाहिये ॥4॥

पुनः नौकागमने उत्पातयोगमाह

लग्नपो नेक्षते लग्नं नाष्टमं निधनाधिपः ।
नद्यां प्रब्रूडिता नौका विज्ञेया गणकोत्तमैः ॥5॥

अन्वयः– लग्नपः लग्नं नेक्षते, निधनाधिपः अष्टमं न (ईक्षते), तदा नौका नद्यां प्रब्रूडिता (इति) गणकोत्तमैः विज्ञेया ॥5॥

प्रेक्षा– यदा लग्नाधिपतिः लग्नं न पश्येत् अष्टमेशः अष्टमभावं न पश्येत् तदा नौका नद्यां सागरे वा निमज्जितास्ति— एवं ज्योतिर्विद्भिः कल्पनीया ॥5॥

सौम्या– नौकाविषयक प्रश्न में यदि लग्न का स्वामी लग्नभाव को न देखे तथा अष्टमभावेश्वर भी अष्टम भाव का अवलोकन न करे तो नौका नदी में डूब गई है— ऐसा विज्ञ ज्योतिषी को कहना चाहिये ॥5॥

विशेष– इसी अध्याय के द्वितीय श्लोक के भाव को ग्रन्थकार ने यहाँ प्रकारान्तर से निरूपित किया है। नौका की कुशलता के लिये लग्न पर लग्नेश तथा अष्टम पर अष्टमेश की स्वामी-दृष्टि का होना आचार्यों ने आवश्यक तथा अपरिहार्य बतलाया है। उक्त दृष्टियों के अभाव में नौका नदी में निमज्जित हो जाती है ॥

नौकाव्यापारेऽलाभकरयोगमाह

लग्नाऽष्टमपती नीचे गुरुर्नवमगो यदि ।
रिपुक्षेत्रे तदा लाभो न नौकाव्यवहारतः ॥6॥

अन्वयः– लग्नाऽष्टमपती यदि नीचे नवमगः गुरुः रिपुक्षेत्रे तदा नौकाव्यवहारतः लाभः न वाच्यः ॥6॥

प्रेक्षा– लग्नाष्टमेशौ यदि स्व-स्वनीचराशौ भवेताम्, नवमभवनस्थितो बृहस्पतिः शत्रुगेहे भवेत्तदा नौकाविषयकक्रयविक्रयव्यवहारात् लाभो न भवति ॥6॥

सौम्या– यदि पृच्छक द्वारा नौका-व्यापार से लाभ का प्रश्न किया गया हो और प्रश्नकुण्डली में लग्नेश तथा अष्टमेश दोनों ही निज-निज नीच भाव में स्थित हों और नवम (भाग्य) भावगत गुरु अपनी शत्रुराशि में बैठा हो तो नौकाधीश को नौका के व्यापार से लाभ नहीं होता— ऐसा फल कहना चाहिये ॥6॥

नौकाव्यापारे हानियोगः

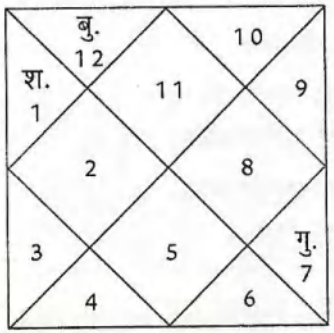

नौकाव्यापारे हानियोगः

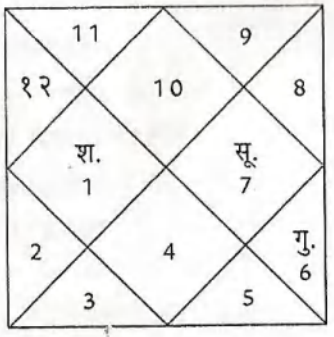

नौकाव्यापारे लाभकारकयोगमाह

नौकाप्रश्ने यदा जीवो निधने लग्ननायकः ।
लग्नं पश्यति चेल्लाभो व्यवहारान्न संशयः ॥7॥

www.44Books.com

अन्वयः– नौकाप्रश्ने यदा जीवः निधने (स्यात्) लग्ननायकः लग्नं पश्यति तदा (नौका) व्यवहारात् लाभः चेत् संशयो नेति वाच्यम् ॥7॥

प्रेक्षा– नौकाप्रश्ने यदि बृहस्पतिः अष्टमस्थाने भवेत् तथा लग्नाधीशोऽपि लग्नमवलोकयति तदा नौकाव्यापारात् वाणिज्याद्वा लाभो भविष्यतीति वाच्यः, अत्र सन्देहो न कार्यः ॥7॥

सौम्या– नौका-व्यापारलाभ के प्रश्न में यदि गुरु अष्टम भाव में बैठा हो और लग्न का स्वामी लग्न पर दृष्टिपात कर रहा हो, तो अवश्य ही नौकाव्यापार से लाभ होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं करना चाहिये ॥7॥

लाभयोगः

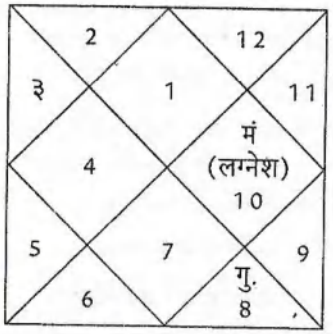

लाभयोगः

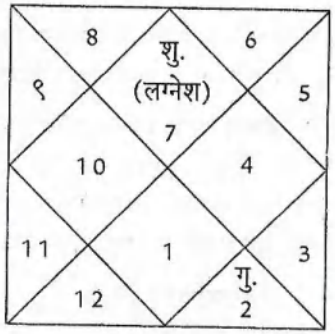

नौकाव्यापारे विशेषलाभयोगमाह

अष्टमे सशुभे शुक्रे सबले तनुपेऽपि च ।
चन्द्रेऽपि तादृशे लग्नं सबलं भूरिलाभकृत् ।।8।।

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते प्रश्नभूषणे नौका-गमनप्रश्नाध्यायः पञ्चमः ।।5।।

अन्वयः– सशुभे शुक्रे अष्टमे तनुपेऽपि च सबले भूरिलाभकृत् चन्द्रेऽपि तादृशे लग्नं सबलं भवेत्तदा भूरिलाभकृत् भवति ॥8॥

प्रेक्षा– शुभग्रहसंयुते भार्गवे लग्नादष्टगते लग्नेशेऽपि च बलान्विते बहुलाभकरयोगो ज्ञेयः अथवा चन्द्रेऽपि तथैव अर्थात् शुभग्रहसंयुते चन्द्रे अष्टमे संस्थिते लग्नं यदि सबलं भवेत्तदाऽपि बहुलाभकरयोगो भवतीति वाच्यः ॥8॥

सौम्या– यदि शुक्र ग्रह शुभ ग्रह से अन्वित होकर अष्टम भाव में स्थित हो और लग्नाधिपति बलवान होकर अष्टमस्थ हो तथा चन्द्र भी पूर्ण बलशाली होकर अष्टम स्थान में गया हो, तो इन ग्रहस्थितियों के वशीभूत होकर नौका बहुत लाभार्जन करके लौटेगी— ऐसा फलादेश ज्योतिषी को करना चाहिये ॥8॥

विशेष– पूर्व में कहा जा चुका है कि नौकाविषयक समस्त प्रश्नों का समाधान अष्टम भाव के अधीन है। यहाँ शुक्र तथा चन्द्र दोनों ही जलतत्त्वप्रधान ग्रह होते हैं। अष्टम भाव जलयात्रा का भाव है। इन दोनों में से किसी भी ग्रह की अष्टमस्थ स्थिति हो तथा लग्नेश बलवान हो तो जलीय मार्ग के व्यापार से आर्थिक लाभ की सम्भावनायें होती हैं।

श्रीकाशीनाथ ने अपने ग्रन्थ 'प्रश्नप्रदीप' में भी यही बात कही है—

शुभयुक्तेक्षितः शुक्रो यदि छिद्रगृहे भवेत्।
बलवानपि लग्नेशस्तदा लाभो जलोद्भवः ॥
अष्टमस्थो यदा चन्द्रो लग्नं वा सबलं भवेत्।
परदेशगतैर्द्रव्यैस्तदा लाभो विशेषतः ॥

नौकाप्रश्ने लाभयोगः

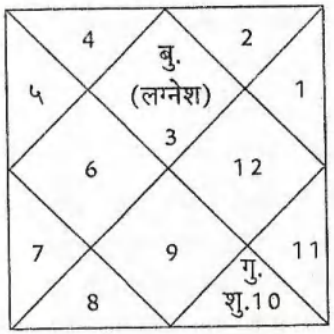

नौकाप्रश्ने लाभयोगः

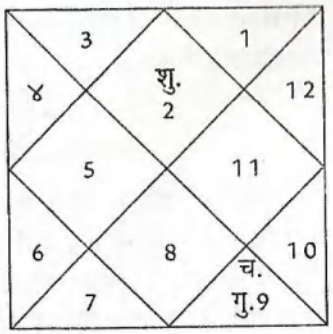

इस प्रकार दैवज्ञजीवनाथप्रणीत प्रश्नभूषण के नौकागमनागमनप्रश्नाध्यायनामक पञ्चम अध्याय की आचार्य गुरुप्रसाद गौड़-कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई ।।5।।

www.44Books.com

अथ शत्रुगमनागमननिवृत्तिप्रश्नाध्यायः

शत्रुगमनागमननिवृत्तियोगमाह

सुखालयेऽलिकुम्भमीनकर्कटा भवन्ति चेद्
रिपोः पराजयस्तदा पलायनं चतुष्पदैः ।
सुतारिभावगैः खलैर्निवर्ततेऽरिवाहिनी
खलैश्चतुर्थभावगैः समेत्य यात्यरं परः ।।1।।

अन्वयः– सुखालये चेत् अलिकुम्भमीनकर्कटाः भवन्ति तदा रिपोः पराजयः स्यात्, सुखालये चतुष्पदैः पलायनं स्यात्, खलैः सुतारिभावगैः अरिवाहिनी निवर्त्तते । खलैः चतुर्थभावगैः परः समेत्य अरं याति ।।1।।

प्रेक्षा– यदा प्रश्नाङ्गे प्रश्नलग्नाच्चतुर्थभवने वृश्चिक-कुम्भ-मीन-कर्कटराशयः भवन्ति, तस्मिन् योगे शत्रोः भङ्गं पराजयं वा भवेत्, यदि चतुर्थभावे मेष-वृष-सिंह-धन्विपरार्द्धाः भवन्ति तदा शत्रोः पलायनं स्यात्, पापग्रहैः पञ्चमषष्ठभावस्थैः रिपुसेना परावर्त्तिता भवति । अशुभैश्चतुर्थभावगतैः शत्रुः समागत्य सत्वरं गच्छतीति । उक्तञ्च षट्पञ्चाशिकायाम्—

झषालिकुम्भकर्कटा रसातले यदा स्थिताः ।
रिपोः पराजयस्तदा चतुष्पदैः पलायनम् ।।

सौम्या– यदि प्रश्नलग्न से चतुर्थ भाव में वृश्चिक, कुम्भ, मीन और कर्क राशियों में से कोई भी एक राशि हो तो आक्रान्ता शत्रुओं की पराजय होती है। यदि चतुर्थ भाव में चतुष्पद राशियों अर्थात् मेष, वृष, सिंह तथा धनु के उत्तरार्द्ध में से कोई भी एक राशि स्थित हो तो शत्रु भयभीत होकर भाग जाता है। यदि सभी पापग्रह प्रश्नलग्न से पाँचवें या छठे भाव में स्थित हों तो शत्रुसेना की वापसी हो जाती है। यदि पापग्रह चतुर्थ भाव में हो तो शत्रु की सेना आकर शीघ्र ही लौट जाती है ।।1।।

विशेष– धनु के उत्तरार्द्ध का अभिप्राय यह है कि चतुर्थ भाव का स्पष्ट अंशादि 15 अंश से अधिक होना चाहिये। प्रश्नफल के सही विचार के लिये भाव-साधन

की आर्ष पद्धति को अपनाना चाहिये, जिसके अनुसार लग्न के राश्यंश आदि में एक-एक राशि जोड़ते हुए द्वितीय आदि भाव स्पष्ट करना चाहिये। इस पद्धति के अनुसार लग्न के राशि, अंश, कला, विकला में तीन राशि जोड़ने पर चतुर्थ भाव स्पष्ट होता है ।।

यायिनां शुभाशुभयोगमाह

चरोदये शुभः शुभं करोति यायिनामरं
खलैरशोभनं तदा स्थिरेऽपि वा सुशोभनम् ।
निशापतिः स्थिरे चरे तनावरेर्न चागमः
तदागमो विपर्यये विपर्ययः पुरातनैः ।।2।।

अन्वयः– चरोदये शुभः (स्यात्तदा) यायिनाम् अरं शुभं करोति वा खलैः (चरे तदा यायिनां) अशोभनं स्यात् । स्थिरेऽपि शुभग्रहो भवेत्तदा सुशोभनं भवतीति । निशापतिः स्थिरे भवेत्तदा तनौ चरे अरेः आगमः न भवति । विपर्यये स्थिरलग्ने निशापति विपर्ययः तदा आगमः ज्ञेयः ।।2।।

प्रेक्षा– प्रश्नकुण्डल्यां चरलग्ने मेषे कर्के तुलायां मकरे वा यदि शुभग्रहो भवेत्तदा यायिनां शीघ्रं शुभं करोति अथवा पापग्रहैः चरलग्ने स्थितैः तदा यायिनां कृते अमङ्गलं स्यात् । स्थिरलग्ने वृषे सिंहे वृश्चिके कुम्भे वाऽपि यदि शुभग्रहो स्यात्तदा मङ्गलं स्यादिति भावः । यदि चन्द्रः स्थिरराशौ स्यात्, लग्ने चरराशिगे सति शत्रोरागमो न भवति । पूर्वलक्षणोक्तव्यत्यये स्थिरे लग्ने सति चन्द्रः चरराशिगतः तदा शत्रोः रागमः वाच्यः एवं पुरातनपण्डितैः भणितम् ।।2।।

सौम्या– यदि शुभ ग्रह प्रश्नकुण्डली की चरराशिलग्न में स्थित हो तो आक्रमणकारी शत्रु के लिये शुभकारक (जयकारक) होता है। यदि चरराशि के लग्न में पापग्रह बैठे हों तो उस यायी (आक्रान्ता शत्रु) के लिये अशुभ फलप्रद (पराजयकारक) होते हैं। इसी प्रकार यदि स्थिर लग्न में भी शुभग्रह स्थित हों तो भी यायी के लिये शुभ फल देने वाले होते हैं। यदि चन्द्रमा स्थिर राशि में तथा प्रश्नलग्न चरराशि में हो तो शत्रु का आगमन नहीं होता; परन्तु लग्न-चन्द्र की स्थिति यदि इससे विपरीत हो अर्थात् चन्द्रमा चरराशि में तथा प्रश्नलग्न स्थिर राशि में हो तो शत्रु का आगमन जानना चाहिये ।।2।।

विशेष– आचार्य पृथुयशा ने निम्न दो श्लोकों में उक्त भाव को निम्न प्रकार अभिव्यक्त किया है—

www.44Books.com

चरोदये शुभः स्थितः शुभं करोति यायिनाम्।
अशोभनैरशोभनं स्थिरोदयेऽपि वा शुभम्॥
स्थिरे शशी चरोदये न चाऽऽगमो रिपोर्यदा।
तदाऽऽगमं रिपोर्वदेद्विपर्यये विपर्ययम्॥
(षट्पञ्चाशिका-2/5-6)

योगान्तरमाह

द्विरात्मभावगे विधौ स्थिरोदयेऽरिवाहिनी
सुदूरमागता सती निवर्त्तते यदा तदा।
द्विदेहभे तनौ शशी चरेऽपि सा निवर्त्तते
विपर्ययेऽरिवाहिनी द्विषत्पुरं समेति सा॥3॥

अन्वयः– विधौ द्विरात्मभावगे स्थिरोदये अरिवाहिनी सुदूरमागता निवर्तते। यदा द्विदेहभे तनौ शशी चरे भवेत् तदा अपि सा अरिवाहिनी निवर्तते। विपर्यये द्विषत्पुरं समेति॥3॥

प्रेक्षा– द्विस्वभावराशौ यदा चन्द्रमा भवति तथा च स्थिरराशौ प्रश्नलग्नं प्राप्ते सति तदा शत्रुः स्वस्थानात् सुदूरमागतोऽपि सन् निवर्तते। यदा द्विस्वभावराशौ लग्ने चन्द्रः चरराशौ स्थितः भवेत् तदाऽपि सा शत्रुसेना शत्रुपुरं प्रतिगच्छतीति। तस्मिन्नेव विपरीते योगे सा रिपुसेना शत्रुग्रामं समागच्छतीति भावः॥3॥

सौम्या– यदि चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि (3, 6, 9 या 11) में स्थित हो और लग्न स्थिर राशि (2, 5, 8, 11) का हो तो बहुत दूर से आयी हुई सेना भी वापस लौट जाती है। जब लग्न द्विस्वभाव राशि का हो और चन्द्र चरराशि में हो तो भी शत्रुसेना लौट जाती है। इसके विपरीत योग होने पर शत्रु की सेना अवश्य आती है॥3॥

विशेष– इसी तथ्य को आचार्य पृथुयशा ने निम्न प्रकार से प्रतिपादित किया है—

स्थिरे तु लग्नमागते द्विरात्मके तु चन्द्रमाः।
निवर्त्तते रिपुस्तदा सुदूरमागतोऽपि सन्॥
चरे शशी लग्नगतो द्विदेहः
पथोऽर्धमागत्य निवर्त्तते रिपुः।
विपर्यये चाऽऽगमनं द्विधा स्यात्
पराजयः स्यादशुभेक्षिते तु॥
(षट्पञ्चाशिका-2/7-8)

जो आक्रमण या चढ़ाई करता है, उसे यायी कहते हैं तथा जिस पर आक्रमण होता है, उसे स्थायी कहा जाता है।

ग्रहस्थितिवशाच्छत्रोर्गमनागमनमाह

शनीज्यवीक्षिते यदा स्थिरोदयेन पृच्छतो
गमागमौ तदा वदेत्त्रिपञ्चषष्ठगाः खलाः।
भवन्ति शत्रुसङ्गमाय वाहनोपगा यदा
निवर्त्तनाय सूरिभिः पुरातनैरितीरितम्॥4॥

अन्वयः– यदा स्थिरोदये शनीज्यवीक्षिते तदा पृच्छतः गमागमौ न वदेत्। त्रिपञ्चषष्ठगाः खलाः शत्रुसङ्गमाय यदा वाहनोपगाः भवन्ति तदा निवर्त्तनाय (भवन्ति) इति पुरातनैः सूरिभिः ईरितमिति॥4॥

प्रेक्षा– यदा स्थिरराशिलग्ने शनिगुरुभ्यामीक्षिते तदा प्राश्निकस्य (शत्रोः) गमनागमनौ न कथयेत्। तृतीयपञ्चषष्ठस्थानस्थिताः पापग्रहाः रिपुसङ्गमाय भवन्ति, प्रष्टुः शत्रुणा सह संयोगो भवतीत्यर्थः। यदि अशुभग्रहाः प्रश्नलग्नात् चतुर्थभावे स्थिताः भवन्ति तदा ते शत्रोर्विनिवर्त्तनाय प्रतीपगमनाय वा भवन्ति इति प्राचीनैः दैवज्ञैः गणकैः वा कथितम्॥4॥

सौम्या– प्रश्नलग्न यदि स्थिरराशिगत हो और वह शनैश्चर तथा बृहस्पति द्वारा देखा जाता हो तब शत्रु का समागम अर्थात् गमनागमन नहीं होता। यदि पापग्रह तृतीय, पञ्चम और षष्ठ (3-5-6) भावों में पापग्रह स्थित हों तो शत्रु अवश्य आयेगा— ऐसा कहना चाहिये। यदि प्रश्नलग्न से चतुर्थ भाव में पापग्रहों की स्थिति हो तो शत्रु वापस लौट जाएगा— ऐसा प्राचीन विद्वानों का मत है॥4॥

शत्रु-सङ्गम योग

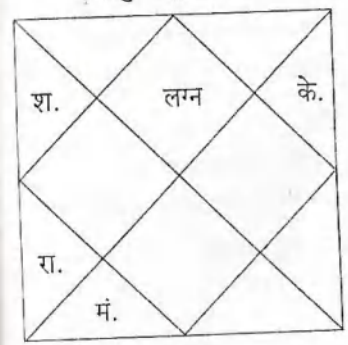

शत्रु-पलायन योग

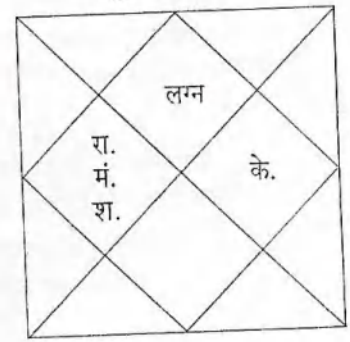

www.44Books.com

गमागमयोगान्तरमाह

चन्द्रादित्यौ चतुर्थस्थौ नायाति रिपुवाहिनी ।
शुक्रज्ञगुरवो बन्धावरमायाति पृच्छतः ।।5।।

अन्वयः– चन्द्रादित्यौ यदि चतुर्थस्थौ (स्याताम्) तदा रिपुवाहिनी नायाति । यदि शुक्रज्ञगुरवः बन्धौ (स्युः) तदा पृच्छतः अरम् आयाति ।।5।।

प्रेक्षा– प्रश्नाङ्गे यदा इन्दुभास्करौ प्रश्नलग्नात् चतुर्थभावस्थौ विद्येते, तदा (तस्मिन् योगे) शत्रुसेना नैवागच्छतीति भावः । यदि प्रश्नकुण्डल्यां भार्गवसौम्येज्याः बन्धुभावे (सुखभावे चतुर्थे वा) भवेयुस्तदा शत्रुसेना सत्वरमेव आगच्छतीति मन्तव्यः । यथोक्तं षट्पञ्चाशिकायाम्—

नागच्छति परचक्रं यदाऽर्कचन्द्रौ चतुर्थभवनस्थौ ।
बुधगुरुशुक्राहिबुके यदा तदा शीघ्रमायाति ।।

सौम्या– यदि चन्द्रमा और सूर्य चतुर्थ भाव में विद्यमान हों तो शत्रुसेना का आगमन नहीं होता । यदि शुक्र, बुध और बृहस्पति-चतुर्थ स्थान में हों तो शीघ्र ही शत्रुसेना का आगमन होता है ।।5।।

विशेष– इस श्लोक में दो योग दिये गये हैं । अस्तु; जब मध्यरात्रि के समय प्रश्न किया जायेगा, सूर्य तभी चतुर्थ स्थान में हो सकता है; अन्यथा नहीं । चन्द्र अकेला तो अहोरात्र में किसी भी समय के लग्न में चतुर्थ भाव में हो सकता है । इसी प्रकार चन्द्र, सूर्य दोनों की चतुर्थ भाव में स्थिति मात्र अमावास्या के समीप ही सम्भव होगी । चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है; अतः दोनों की चतुर्थ स्थान में युति प्रत्येक चान्द्रमास में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तथा अमावास्या को ही सम्भव है । अतः यह योग मेष राशि के सूर्य में, मकर लग्न में तथा वैशाखी अमावास्या के समीप वृष के सूर्य में, कुम्भ लग्न में तथा ज्येष्ठ अमावास्या के समीप मिथुन के सूर्य में, मीन लग्न में तथा आषाढ़ी अमावास्या के समीप कर्क के सूर्य में, मेष लग्न और हरयाली अमावास्या के समीप सिंहेऽर्क में— यह योग वृषभ लग्न तथा भाद्रपद की अमावास्या के समीप बन सकता है । ऐसा ही अन्य मासों में भी जानना चाहिये ।।

पुनश्च योगान्तरमाह

चलितो न रिपुर्जीवो मन्दो वापि स्थिरोदये ।
चरोदये चेदादित्यो जीवो वाऽऽयाति सत्वरम् ।।6।।

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते प्रश्नभूषणे शत्रु-गमनागमननिवृत्तिप्रश्नाध्यायः ।।6।।

अन्वयः– जीवः वापि मन्दः यदि स्थिरोदये स्यात्तदा रिपुः चलितः न (वाच्यः) । चेत् यदि आदित्यः वा जीवः चरोदये स्यात्तदा सत्वरं आयाति ।।6।।

प्रेक्षा– बृहस्पतिः अथवा शनिश्चरः यदि स्थिरराशिलग्ने अर्थात् वृषे सिंहे वृश्चिके कुम्भे वा भवति तदा शत्रुः स्वस्थानान्न चलितः, तत्रैव तिष्ठतीति वाच्यम् अथवा चरराशौ लग्नगते भास्करः वा इज्यः वा भवति तदा शत्रोरागमनं शीघ्रं भवेत् इति भावः ।।6।।

सौम्या– स्थिरराशि के प्रश्नलग्न में यदि बृहस्पति अथवा शनि स्थित हो तो शत्रु का आगमन नहीं होता । इसी प्रकार यदि प्रश्नलग्न में चरराशि में सूर्य अथवा गुरु स्थित हो तो शत्रु शीघ्र ही आता है ।।6।।

विशेष– आचार्य पृथुयशा ने इसी बात को निम्न शब्दों में कहा है—

स्थिरराशौ यद्युदये शनिर्गुरुर्वा स्थितिस्तदा शत्रोः ।
उदये रविर्गुरुर्वा चरराशौ स्यात्तदाऽऽगमनम् ।।

(षट्पञ्चाशिका-2/13)

शत्रु-आगमन योग

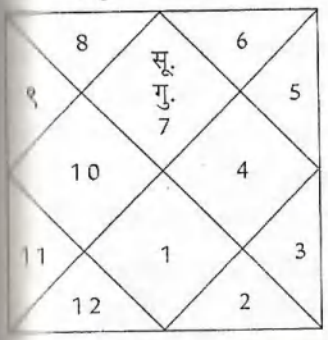

शत्रु-अनागमन योग

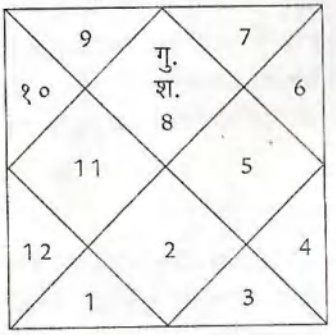

इस प्रकार दैवज्ञजीवनाथप्रणीत प्रश्नभूषण के गमनागमननिवृत्तिप्रश्नाध्यायनामक षष्ठ अध्याय की आचार्य गुरुप्रसाद गौड़-कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई ।।6।।

www.44Books.com

अथ विवाहप्रश्नाध्यायः

विवाहकारकयोगमाह

त्रिसप्तमायपञ्चमारिभावगो निशाकरो
रविज्ञजीववीक्षितो विवाहकारको भवेत् ।
त्रिकोणकेन्द्रगा गुरुज्ञशुक्रशीतभानवो
यदीह लग्नतो भवन्ति वा विवाहकारकाः ।।1।।

अन्वयः– त्रिसप्तमायपञ्चमारिभावगः निशाकरः रविज्ञजीववीक्षितः विवाह-कारकः भवेत् । यदि इह लग्नतः गुरुज्ञशुक्रशीतभानवः त्रिकोणकेन्द्रगाः तदा विवाह-कारकाः भवन्ति ।।1।।

प्रेक्षा– तृतीय-जाया-एकादश-पञ्चम-षष्ठस्थानस्थः शीतांशुः चन्द्रः वा, सूर्य-बुध-गुरुग्रहैः अवलोकितः तदा विवाहकारकः स्यात् । यदि प्रश्नलग्नात् बृहस्पति-सौम्य-भार्गव-चन्द्र-भास्करादयः नवम-पञ्चम-प्रथम-चतुर्थ-सप्तम-दशमभावस्थाः स्युः तदा विवाहकारकाः भवन्ति । अस्मिन् योगे प्राश्निकस्य विवाहः भवतीति । अत्र विशेषोक्तं वराहमिहिरेण—

अत्रैव यदि योगे स्याच्छुभः सप्तमवेश्मनि ।
तदा लभेत सज्जायां पापश्चेद्रूपवर्जिताम् ।।

(दैवज्ञवल्लभा-12/2)

सौम्या– विवाहविषयक प्रश्नकुण्डली में यदि चन्द्रमा तृतीय, एकादश, सप्तम, पञ्चम या षष्ठ भाव में विद्यमान हो और वह सूर्य, बुध, बृहस्पति (इनमें से किसी एक) के द्वारा देखा जाता हो तो विवाह कराता है । दूसरा योग यह है कि यदि बृहस्पति, बुध, शुक्र और चन्द्रमा लग्न से त्रिकोण (नवम और पञ्चम भाव में) और केन्द्रभावों अर्थात् प्रथम-चतुर्थ-सप्तम और दशम में स्थित रहें तो भी विवाहहेतु उत्तरदायक होते हैं ।।1।।

विशेष– श्री पृथुयशा ने अपनी प्रश्नसम्बन्धी रचना में भी चन्द्र की 3-5-6-7-11 स्थानों में स्थिति तथा उस पर गुरु, सूर्य, बुध की दृष्टि को विवाहसूचक

माना है । साथ ही यदि त्रिकोण भावों में कोई पापग्रह न हो तथा केवल शुभ ग्रह स्थित हों तो इस योग को विवाह हेतु उत्तम कहा है—

गुरुरविसौम्यैर्दृष्टः त्रिसुतमदायारिगः शशिलग्नात् ।
भवति च विवाहकर्ता त्रिकोणकेन्द्रेषु वा सौम्याः ।।

(षट्पञ्चाशिका-7/2)

शीघ्रविवाहकारकयोगमाह

प्रश्नलग्नेशजायाधिपौ स्वर्क्षगौ
उच्चभावस्थितौ चेन्मिथो वीक्षितौ ।
लग्नपः सप्तमे सप्तमेशो यदा
लग्नगः सत्वरं यद्विवाहं वदेत् ।।2।।

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते प्रश्नभूषणे
विवाहप्रश्नाध्यायः ।।7।।

अन्वयः– प्रश्नलग्नेशजायाधिपौ स्वर्क्षगौ उच्चभावस्थितौ चेत् मिथः वीक्षितः तदा विवाहं वदेत् । यहा लग्नपः सप्तमे, सप्तमेशः लग्नगः तदा सत्वरं विवाहं वदेत् ।।2।।

प्रेक्षा– प्रश्नलग्नेश्वर-सप्तमभावेशौ यदि स्वराशिस्थौ स्व-स्वोच्चराशिगतौ वा परस्परावलोकतः स्यातां तदा विवाहं कथयेत् । यदा विवाहविषयकप्रश्नाङ्गे लग्नाधिपतिः प्रश्नलग्नात्सप्तमभावे विराजितः जायाभावाधीश्वरः प्रश्नलग्नगतः तदाऽपि शीघ्रं विवाहं दैवज्ञः वदेत् । अस्मिन्विषये वराहमिहिरप्रतिपादितविशेषोल्लेखः प्राप्यते—

समस्थिते सूर्यसुते वरस्य लभ्या भवेन्निश्चितमेव कन्या ।
अतोऽन्यथात्वं विषमस्थितेऽस्मिन्निःसंशयं प्रष्टुरुदाहरन्ति ।।
सप्तमवित्तोपचयस्थानस्थो गुरुनिरीक्षितश्चन्द्रः ।
तनुते कन्यालाभं तत् नाशं पापयुतदृष्टः ।।

(दैवज्ञवल्लभा-12/3-4)

सौम्या– प्रश्नलग्नाधिपति और सप्तमाधिपति यदि अपनी-अपनी राशि में (स्वराशियों में) अथवा स्व-स्व उच्च राशियों में स्थित होकर एक-दूसरे को देखते हों, तो विवाहकारक योग बनता है । इसके अतिरिक्त लग्न का स्वामी यदि सप्तम भाव में विद्यमान हो और सप्तम भाव का स्वामी लग्न में विद्यमान हो तो शीघ्र ही विवाह होता है ।।2।।

upayogibooks.com

www.44Books.com

विशेष– ग्रहों की दृष्टि– प्रश्नग्रन्थों के रचयिताओं ने अलग-अलग दृष्टि का उपयोग किया है। इस ग्रन्थ के रचयिता ने अपने भावकुतूहल ग्रन्थ में पाराशरी दृष्टि का उपयोग किया है; अत: उसका गणितागत मूल्य (आंकिक मूल्य) निकालने के लिये आगे दी गई दृष्टि-सारिणी का उपयोग कर सकते हैं।

ग्रहषड्बल

इस ग्रन्थ में अनेक स्थानों पर ग्रहों के बली तथा निर्बल होने का उल्लेख है। अस्तु; यहाँ पाठकों की सुविधा के लिये सरलतम विधि से ग्रहों के षड्बल का आकलन लिखा जा रहा है—

1. स्थानबल– यह पाँच प्रकार के बलों से मिलकर बनता है—

क. उच्च बल– सूर्यादि ग्रहों का उच्च बल निकालने के लिये प्रश्नकालिक ग्रहस्पष्ट में से ग्रह के नीच राशि का अंश घटावें। कला-विकलादि को छोड़ दें, क्योंकि प्रश्न का उत्तर तत्काल देना होता है। अत: विलम्ब से बचना आवश्यक है। स्थूल बल से ही काम चल जाता है। जो राशि-अंश शेष रहें, उनका फल आगे दी गई उच्च बल-दिग्बलादि साधक सारिणी में देख लें। इससे आंकिक दिग्बल प्राप्त हो जायेगा। मान लीजिये कि सूर्यस्पष्ट राश्यादि 3।7°।11'।33'' है। इसमें से सूर्य के नीच राशि का अंश घटायें = 3।7°—7।10° = 8।27°। यहाँ सूर्यस्पष्ट की राशिसंख्या नीच से कम है; अत: सूर्य की राशि 3 में 12 जोड़ कर 14।37 हुए और 15 राशि में नीच की छ: राशि घटाने पर आठ राशि शेष रही। जब राशिसंख्या छ: से अधिक हो तो इसे बारह राशि (अर्थात् 11 राशि 30°) में से घटाना चाहिये; अत: रा. 11।30—8-27 = 3।3° शेष रहे। इसका फल सारिणी में देखने पर 31' प्राप्त हुआ। 3 राशि का फल 30 कला तथा 3 अंशों का फल एक कला प्राप्त हुआ।

स्मरणीय– जब ऊपर वाली संख्या में अंश कम हों तो एक राशि के अंश उधार लेकर उसमें से नीचे के अंश घटावें। राशिसंख्या में नीचे की राशि न घटने पर ऊपर वाली राशिसंख्या में 12 राशि जोड़कर घटाते हैं।

षडभाल्प– बारह राशियों = 11 राशि 30 अंश में से किन्हीं राशि अंशों को घटाना षडभाल्प कहलाता है। इसी को मण्डलशुद्धि या चक्रशुद्धि भी कहते हैं।

ख. सप्तवर्गैक्य बल– गृह (राशि), होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश,

दशांश तथा त्रिंशांश कुण्डलियों में जो ग्रह जैसी स्थिति में हो, उसका बल स्व-राशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि तथा अधिशत्रु राशि के अनुसार आगे दिये गए सप्तवर्गैक्य बलबोधक चक्र से निकाल लेना चाहिये।

ग्रहों के उच्च-नीचादि, शत्रु-मित्र आदि के ज्ञान के लिये पीछे अध्याय दो में कह दिया गया है। प्रत्येक ग्रह अपने साथ वाले ग्रह को छोड़कर अपने आगे-पीछे के तीन-तीन भावों का तात्कालिक मैत्री में मित्र होता है। शेष स्थानों में बैठे ग्रहों का शत्रु होता है। जो ग्रह नैसर्गिक तथा तात्कालिक दोनों प्रकार से मित्र होता है, वह **अधिमित्र** कहलाता है। जो एक ही जगह मित्र हो तथा दूसरी जगह शत्रु हो वह **सम** कहलाता है। जो नैसर्गिक मैत्री में सम तथा तात्कालिक मैत्री में मित्र है, वह **मित्र** होता है। जो नैसर्गिक मैत्री में शत्रु तथा तात्कालिक में सम होता है, वह **शत्रु** होता है तथा जो दोनों प्रकार की मैत्री में शत्रु होता है, वह **अधिशत्रु** होता है। यही पञ्चधा मैत्री होती है।

ग. युग्मायुग्म बल (भांश-बल)– चन्द्र तथा शुक्र— ये दोनों स्त्रीग्रह हैं; अत: यदि ये दोनों सम राशि तथा सम नवांश में हों तो 30' बल देते हैं। एक में सम राशि में दूसरे में विषम हो तो केवल 15' बल प्राप्त होता है। यदि लग्न-कुण्डली तथा नवांश-कुण्डली में दोनों में विषम राशि में हों तो शून्य कला बल मिलता है। शेष सूर्य, मंगल, बुध, गुरु तथा शनि— ये ग्रह विषम राशि में दोनों (लग्न तथा नवांश) में होने पर 30' बल, एक में होने पर 15' बल और एक में भी विषम राशि में न हो तो शून्य कला बल मिलता है। इसमें सम राशि (स्त्री-राशि) में स्त्रीग्रह तथा विषम राशि (पुरुष राशि) में पुरुष ग्रह बली होते हैं।

घ. द्रेष्काणबल– एक राशि में तीन द्रेष्काण होते हैं। अत: इसमें ग्रहों के लिङ्ग का विचार तीन प्रकार से किया जाता है। पुरुष ग्रह (सूर्य-मंगल-गुरु) यदि किसी राशि में प्रथम द्रेष्काण में हों तो 15 कला बल देते हैं; अन्यथा शून्य बल होता है। नपुंसक ग्रह (बुध-शनि) यदि राशि के दूसरे द्रेष्काण में हों तब 15 कला बल देते हैं; अन्यथा शून्य बल होता है। स्त्रीग्रह (चन्द्र-शुक्र) यदि राशि के तृतीय द्रेष्काण में हों तब 15 कला बल देते हैं; अन्यथा शून्य बल होता है।

ङ. केन्द्रादि बल– केन्द्र में स्थित ग्रह 60 कला, पणफर में स्थित ग्रह 30 कला तथा आत्मोत्क्रम (आपोक्लिम) में स्थित ग्रह 15 कला बल देता है।

2. दिग्बल– लग्न पूर्व दिशा है; इसमें बुध-गुरु बली होते हैं। ये दोनों सप्तम में निर्बल रहते हैं। अत: इन दोनों के स्पष्ट में सप्तम भाव के राशि-अंश को घटाकर

www.44Books.com

शेष राशि-अंश यदि 6 से अधिक हो, तो उन्हें षड्भाल्प कर लें और उनक कलात्मक बल आगे दी गई सारिणी में देख लें। दशम भाव दक्षिण दिशा है। इस सूर्य-मंगल बली होते हैं तथा चतुर्थ में निर्बल रहते हैं। सप्तम भाव पश्चिम दिश है। इसमें शनि बली होता है तथा लग्न में निर्बल होता है। चतुर्थ भाव उत्तर दिश है। इसमें चन्द्र-शुक्र बली होते हैं तथा दशम में निर्बल रहते हैं।

प्रत्येक ग्रह में से उसके निर्बल भाव के राशि-अंश घटाकर जो राशि-अं प्राप्त हों, वे छः राशि से अधिक होने पर षड्भाल्प कर शेष राशि-अंशों के आधा पर कलात्मक बल प्राप्त कर लेना चाहिये।

3. कालबल– चार प्रकार के बलों को मिलाकर कालबल बनता है—

क. नतोन्नत बल– अर्द्धरात्रि के बाद से मध्याह्न के समय तक सूर्य पूर्व कपाल में रहता है। अतः मध्याह्न के सूर्य से जितने घटी-पल पहले किसी का जन्म हो जाता है, वह समय **पूर्वनत** कहलाता है। यदि वह समय दिन में है, तो दिवा पूर्वनत होता है। मध्याह्न के पश्चात् मध्य रात्रि तक जो समय बीतता है, उन घटी-पलों को **पश्चिमनत** कहा जाता है; क्योंकि उस समय सूर्य पश्चिम कपाल में रहता है। इस प्रकार नतकाल निकालने पर, नत घट्यादि को दूना करने से चन्द्र-मंगल-शनि क कलादि बल प्राप्त होता है। इनके बल को 60 कला में घटाने पर सूर्य-गुरु-शुक्र का बल प्राप्त होता है। बुध को सदैव 60 कला-बल प्राप्त होता है।

ख. पक्षबल– चन्द्रस्पष्ट में, सूर्यस्पष्ट के राश्यंश घटा कर शेष का फल षड्भाल्प करके बलसारिणी में देख लें। यह बल शुभ ग्रहों (चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र) का होगा। इस बल को 60 कला में से घटाने पर सूर्य, मंगल, शनि का बल प्राप्त होता है।

ग. अहोरात्र-त्रिभाग-बल– दिन-रात्रि के तीन भाग करें। यदि दिन का जन्म हो तो दिन के पहले भाग में बुध बली, दूसरे भाग में सूर्य बली तथा तीसरे भाग में शनि बली होता है। रात्रि के प्रथम भाग में जन्म या प्रश्न होने पर चन्द्र बली, दूसरे भाग में शुक्र बली तथा तीसरे भाग में मंगल बली होता है। इसमें बली ग्रह को 60 कला बल मिलता है। गुरु सदैव 60 कला बल प्राप्त करता है।

घ. वर्षेशादि-बल– प्रश्नवर्ष के चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को जो वार हो, उसके ग्रह को 15 कला बल, प्रश्नमास की शुक्ल प्रतिपदा को जो वार हो उसके स्वामी ग्रह को तीस कला बल तथा जिस दिन प्रश्न पूछा जाय, उस दिन के वारेश को 45 कला बल तथा प्रश्नकालिक होरेश को 60 कला बल मिलता है। यही वर्षेशादि-बल है।

4. चेष्टाबल– यह दो प्रकार का होता है—

क. अयनबल– अच्छे पञ्चाङ्गों में ग्रहों की प्रतिदिन की क्रान्ति दी रहती है। उस क्रान्ति को ग्रहण करें और आगे दी गई अयन-बल-सारिणी से क्रान्तिबल ग्रहण करें। जब सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र— इन चारों की उत्तरा (+) क्रान्ति हो या चन्द्र एवं शनि की दक्षिणा (–) क्रान्ति हो तब सारिणी (क) से अयनबल ले लें। जब सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र की दक्षिणा क्रान्ति हो अथवा चन्द्र, शनि की उत्तरा क्रान्ति हो, तो सारिणी (ख) के अनुसार क्रान्ति अंशों का फल ग्रहण करें (अयन-बल ग्रहण करें)। बुध को किसी भी प्रकार की क्रान्ति होने पर उसके क्रान्ति-अंशों का बल सदैव सारिणी (क) से ही ज्ञात करें।

ख. चेष्टा-केन्द्रबल– भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग में वर्षारम्भ के दिन चैत्र मास के प्रथम दिनांक (लगभग 22 मार्च) के प्रातः 5।30 बजे के मध्यम ग्रह दिये जाते हैं, उसमें शीघ्रोच्च भी सम्मिलित रहता है। वहाँ से शीघ्रोच्च तथा मध्यम ग्रह प्राप्त कर उन्हें मध्यम गति से गुणा कर प्रश्नकालिक बना लेना चाहिये। फिर मंगल, गुरु, शनि का चेष्टाकेन्द्र निकालने के लिये मध्यम ग्रह तथा स्पष्ट ग्रह के राशि-अंशों को जोड़ दें और फिर उन्हें आधा कर दें। उसे मध्यम सूर्यस्पष्ट में से घटा दें, शेष को आवश्यकता होने पर षड्भाल्प कर लें और फिर प्रत्येक ग्रह के षड्भाल्प चेष्टाकेन्द्र का बल आगे दी गई बलसारिणी से निकाल लें। बुध तथा शुक्र का चेष्टाकेन्द्र निकालने के लिये उनके मध्यम तथा स्पष्ट के राश्यंश को जोड़कर आधा कर दें, फिर उनके शीघ्रोच्च में से घटा दें। तो चेष्टाकेन्द्र प्राप्त होगा, इसका बल भी सारिणी से प्राप्त करें। सूर्य का अयनबल ही चेष्टाबल होता है तथा चन्द्र का पक्षबल ही चेष्टा होता है। इन दोनों के बल को दुगुना कर देना चाहिये। अयन तथा चेष्टाकेन्द्र को मिला कर चेष्टाबल प्राप्त होता है।

ग्रहबलसारिणी (राशिफल चक्र)

शेष राशि	0	1	2	3	4	5	6
बल (कला)	0	10	20	30	40	50	60

ग्रहबलसारिणी (अंशफल चक्र)

शेष अंश	3	6	9	12	15	18	21	24	27	30
बल (कला)	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

www.44Books.com

इस सारिणी का उपयोग उच्च बल, दिग्बल, पक्षबल, चेष्टा-केन्द्र बल आदि के लिये पूर्व में दिये गए निर्देशों के अनुसार करें।

ग्रहबलसारिणी (अंशफल चक्र)

सप्तवर्गों में ग्रहस्थिति	स्वगृह	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
बल (कला)	30	22।।	15	7।।	3।।।	1'। 52''

5- नैसर्गिक बल (सदैव स्थिर रहता है)

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल (कला)	60'	51'	17'	25'	34'	43'	8।।'

ग्रहदृष्टि-साधन-सारिणी

श.अं. श्रे.रा.	2	4	6	8	10	12	14	15	16	18	20	22	24	26	28	29
1	1	2	3	4	5	6	7	7।।	8	9	10	11	12	13	14	14।।
2	17	19	21	23	25	27	29	30	31	33	35	37	39	41	43	44
3	44	43	42	41	40	39	38	37।।	37	36	35	34	33	32	31	30।।
4	28	26	24	22	20	18	16	15	14	12	10	8	6	4	2	1
5	4	8	12	16	20	24	28	30	32	36	40	44	48	52	56	58
6	59	58	57	56	55	54	53	52।।	52	51	50	49	48	47	46	45
7	44	43	42	41	40	39	38	37।।	37	36	35	34	33	32	31	30।।
8	29	28	27	26	23	24	23	22	22	21	20	19	18	17	16	15
9	14	13	12	11	10	9	8	7।।	7	6	5	4	3	2	1	।।

दृश्य ग्रह के राशि अंश में द्रष्टा ग्रह के राशि अंश घटा दें। शेष राशि अंश पर दृष्टि कला प्राप्त होंगी। इस सारिणी में मंगल, गुरु, शनि की विशेष दृष्टि शामिल नहीं है। प्रश्न हेतु उपयोग के लिये है। इस प्रकार से प्रत्येक ग्रह पर तथा लग्न पर द्रष्टा ग्रहों से प्राप्त दृष्टि में शुभ ग्रहों तथा अशुभ ग्रहों की दृष्टि का योग अलग-अलग कर लेना चाहिये।

6. दृग्बल– शुभ ग्रहों की दृष्टियोग का चतुर्थांश धनात्मक दृग्बल तथा पाप ग्रहों (सूर्य-मंगल-शनि-क्षीण-चन्द्र तथा पापपीडित बुध) की दृष्टियोग का चतुर्थांश ऋणात्मक दृग्बल होता है।

षड्बल पिण्ड– पहले पाँचों प्रकार की दृष्टियों का योग कर ले, फिर उसमें धनात्मक दृग्बल को जोड़ कर तथा ऋणात्मक दृग्बल को घटा कर षड्बल प्राप्त होता है।

इस प्रकार दैवज्ञजीवनाथप्रणीत प्रश्नभूषण के
विवाहप्रश्नाध्यायनामक सप्तम अध्याय
की आचार्य गुरुप्रसाद गौड़कृत
संस्कृत-हिन्दी व्याख्या
पूर्ण हुई ।।7।।

upayogibooks.com

www.44Books.com

अथ स्त्रीप्रश्नाध्यायः

दम्पत्योः परस्परप्रीतियोगमाह

लग्नजायाधिपौ स्वस्थौ यदि वा व्यत्ययेन तौ ।
दिने-दिनेऽधिका प्रीतिर्दम्पत्योर्जायते मिथः ।।1।।

अन्वयः– लग्नजायाधिपौ यदि स्वस्थौ (स्याताम्) व्यत्ययेन तदा दम्पत्योः मिथः दिने-दिने अधिका प्रीतिः जायते ॥1॥

प्रेक्षा– लग्नेश्वरसप्तमाधीशौ यदि अनुक्रमेण लग्नसप्तमभावस्थौ स्याताम्, व्यत्ययेन अर्थात् लग्नेश्वरः सप्तमे सप्तमेश्वरः लग्ने च संस्थितः तदा स्त्रीपुरुषयोः कन्यावरयोः वा परस्परं प्रतिदिनं विशेषा प्रीतिः अनुरागः वा वर्द्धते ॥1॥

सौम्या– लग्नस्वामी और सप्तम भाव का स्वामी यदि निज-निज राशियों के अन्तर्गत हों अथवा लग्न का नायक सप्तम भाव में स्थित हो और सप्तम भाव का स्वामी लग्नस्थ हो तो दाम्पत्य प्रेम दिनानुदिन वृद्धि को प्राप्त होता है अर्थात् स्त्री-पुरुष दोनों की परस्पर प्रीति बढ़ती है ॥1॥

नरो लग्नपतिः कामे जायाऽऽज्ञाप्रतिपालकः ।
नारी जायाऽधिपे लग्ने पत्याज्ञाकारिणी भवेत् ।।2।।

अन्वयः– लग्नपतिः कामे (सति) नरः जायाज्ञाप्रतिपालकः जायाधिपे लग्ने नारी पत्याज्ञाकारिणी भवेत् ॥2॥

प्रेक्षा– लग्नेश्वरः सप्तमभावे सति, पुरुषः पत्न्याज्ञाकरः स्यात् । सप्तमभावेशे लग्नगते सति स्त्री पत्याज्ञाकारिणी भवेदिति ॥2॥

सौम्या– लग्न का स्वामी सप्तम स्थान में विराजमान हो तो पुरुष अपनी पत्नी की आज्ञा का पालन करता है अर्थात् उसके प्रभाववश होकर रहता है और सप्तमाधिपति यदि लग्न में स्थित हो तो पत्नी के ऊपर पति का शासन चलता है ॥2॥

विशेष– उपर्युक्त श्लोक में आचार्य जीवनाथ ने दाम्पत्य जीवन (Conjugul life) में पति-पत्नी द्वारा एक-दूसरे को प्रभुत्व (Dominate) करने के योग का प्रतिपादन किया है ॥

ग्रहदृष्टिवशात्परस्परप्रीतियोगमाह

लग्नजायेशयोर्दृष्टिर्लग्ने वा सप्तमे तयोः ।
परस्परं तदा प्रीतिः पीयूषसदृशी भवेत् ।।3।।

अन्वयः– लग्नजायेशयोः लग्ने वा सप्तमे दृष्टिः तदा तयोः परस्परं प्रीतिः पीयूषसदृशी भवेत् ॥3॥

प्रेक्षा– लग्नेश्वर-सप्तमेश्वरयोः लग्नोपरि (तनुभावे) अथवा सप्तमभवने दृष्टिः भवेत्तदा स्त्री-पुरुषयोः परस्परानुरागः अमृतास्वादनतुल्यः भवेदिति ॥3॥

सौम्या– लग्नेश और सप्तमाधिपति दोनों की सम्मिलित दृष्टि तनुभाव (लग्न) पर अथवा सप्तम (जाया) भाव पर जब होती है, तो दोनों (स्त्री-पुरुष) में पारस्परिक स्नेह अमृत के तुल्य होता है ॥3॥

विशेष– दाम्पत्य जीवन को सुखदायक बनाने तथा वैवाहिक योगों में लग्न, सप्तम तथा लग्नेश, सप्तमेश की महती भूमिका होती है । लग्नेश तथा सप्तमेश विविध स्थितियों के अनुसार उक्त योगों का निर्माण करते हैं ॥

परस्परप्रीतियोग

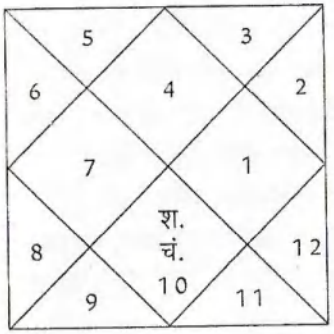

परस्परप्रीतियोग

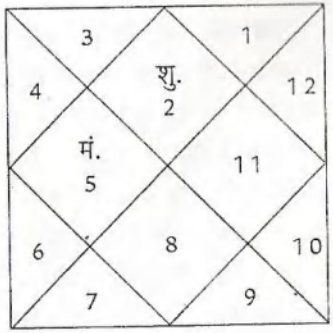

दम्पत्योः कोऽधिको गुणी भवेदिति योगमाह

प्रश्नलग्नपतिः स्वोच्चे गुणैरुच्चो भवेत्पतिः ।
जायास्वामी यदोच्चस्थो नारी स्वामिगुणाधिका ।।4।।

अन्वयः– प्रश्नलग्नपतिः स्वोच्चे पतिः गुणैः उच्चः, जायास्वामी उच्चस्थः तदा नारी स्वामिगुणाधिका भवेत् ॥4॥

www.44Books.com

प्रेक्षा– यदा प्रश्नलग्नेश: स्वकीयोच्चराशौ भवेत्तदा भर्त्ता शौर्य-धैर्य-विद्यादि-गुणैरधिक: भवेत् । यदा सप्तमेश: प्रश्नकुण्डल्यां उच्चभवनस्थित: तदा पत्नी स्व-पतिरपेक्षयाऽधिकगुणवती भवेत् इत्यर्थ: ॥4॥

सौम्या– प्रश्नकुण्डली में जब प्रश्नलग्नेश अपनी उच्च राशि में स्थित होता है तब पति अधिक गुणों वाला तथा योग्यताओं से सम्पन्न होता है; परन्तु जब सप्तमेश उच्च राशिगत होता है तो ऐसी स्थिति में पत्नी पति की तुलना में अधिक शिक्षित तथा समझदार होती है ॥4॥

स्त्रीमरणयोगमाह

सप्तमे सुखभे क्रूरो भार्गवो यदि दुर्बल: ।
न जीवति तदा नारी राहुर्वा कामिनीगृहे ॥5॥

अन्वय:– यदि सप्तमे सुखभे क्रूर: भार्गव: दुर्बल: । तदा नारी न जीवति । वा कामिनीगृहे राहु: (तदा नारी न जीवति) ॥5॥

प्रेक्षा– यदि कुण्डल्यां प्रश्नलग्नात् सप्तमभवने वा चतुर्थभवने पापग्रहो भवेत् वा सप्तमस्थाने राहु: भवेत्तदा नारी न जीवति इति वाच्यम् ॥5॥

सौम्या– यदि चतुर्थ या सप्तम भाव में क्रूर ग्रह हों तो पत्नी की मृत्यु होती है अथवा यदि सप्तम भाव में राहु हो तो भी यही फल प्राप्त होता है । यहाँ यह ध्यातव्य है कि राहु केवल सप्तम भाव में ही पत्नीनाश का सूचक होता है । इसका कारण यह है कि राहु को दृष्टि नहीं होती । मंगल यदि चतुर्थ भाव में बैठेगा तो वह अपनी विशेष दृष्टि से सप्तम भवन को देखकर पत्नीनाशक बनेगा । यदि शनि हो तो वह अपनी पादोन दृष्टि से चतुर्थ में बैठकर सप्तम को देखता है । राहु भी पापग्रह है; परन्तु वह दृष्टिहीन होने से सप्तम पर चतुर्थ में बैठ कर कोई प्रभाव नहीं कर पाता ॥5॥

द्विभार्यायोगमाह

चतुर्थं सप्तमञ्चैव पञ्चमं सौम्यवीक्षितम् ।
विवाहिता धृता चापि द्वे भार्ये भवतस्तदा ॥6॥

अन्वय:– चतुर्थं सप्तमं पञ्चमञ्चैव सौम्यवीक्षितं तदा विवाहिता च धृता अपि द्वे भार्ये भवत: ॥6॥

प्रेक्षा– यदि प्रश्नलग्नात् चतुर्थं भवनं, सप्तमं भवनं, पञ्चमं भवनं सौम्यवीक्षितं भवेत्तदा वेदोक्तविवाहविधिना परिणीता अन्या च धृता (प्रेमिका वा बलात्कारेण गृहीता) द्वे भार्ये भवत: ॥6॥

सौम्या– जब प्रश्नकुण्डली के चतुर्थ, सप्तम तथा पञ्चम भाव शुभग्रहों द्वारा दृष्ट होते हैं तो प्रश्नकर्त्ता की या जिसके सम्बन्ध में प्रश्न पूछा गया है, उसकी दो पत्नियाँ हुआ करती हैं ॥6॥

प्रथमस्त्रीमरणयोगमाह

सप्तमे खलसंयुक्ते चतुर्थे शुभसंयुते ।
म्रियते प्रथमा नारी धृता च परितिष्ठति ॥7॥

अन्वय:– सप्तमे खल संयुक्ते चतुर्थे शुभसंयुते प्रथमा नारी म्रियते परितिष्ठति च धृता ॥7॥

प्रेक्षा– यदा प्रश्नकुण्डल्यां सप्तमे भवने पापग्रहस्थिते चतुर्थभावे शुभग्रहस्थिते तदा प्रथमा (विवाहिता नारी) निधनं याति द्वितीया (धृता) जीवति इत्यर्थ: ॥7॥

सौम्या– यदि सप्तम भाव में पापग्रह बैठा हो, परन्तु चतुर्थ में शुभ ग्रह बैठा हो तो पहले वाली विवाहिता पत्नी का मरण होता है तथा दूसरी रखैल या प्रेमिका जीवित रहती है ॥7॥

औरसादिपुत्रयोगमाह

पापग्रहा: स्थिरे लग्ने स्वपते: पुत्रसम्भव: ।
शुभाशुभा: स्थिरे लग्ने मिश्रित: पुत्रसम्भव: ॥8॥

अन्वय:– पापग्रहा: स्थिरे लग्ने स्वपते: पुत्रसम्भव: । स्थिरे लग्ने शुभाशुभा: मिश्रित: पुत्रसम्भव: ॥8॥

प्रेक्षा– यदि पापग्रहा: स्थिरे लग्ने (वृष-सिंह-वृश्चिक-कुम्भ एषामन्यतमे) भवेयु: तदा स्वपते: सकाशात् पुत्रोत्पत्ति: भवति अर्थात् औरसो पुत्रो भवति । स्थिरे लग्ने यदि शुभाशुभा: मिश्रिता: ग्रहा: भवेयु: तदा मिश्रित: (स्वपतिज: + परपतिज:) पुत्रो कथनीयम् ॥8॥

सौम्या– यदि स्थिर राशियों के लग्न में पापग्रह स्थित हों तो औरस पुत्र (अपने

www.44Books.com

पति से उत्पन्न) होता है। यदि स्थिर राशि के लग्न में शुभ और पाप दोनों प्रकार के ग्रह बैठे हों तो जारज पुत्र उत्पन्न होता है ॥8॥

विशेष– यहाँ 'मिश्रितः' शब्द का अभिप्राय यह भी हो सकता है कि एकाध पुत्र स्वपति से तथा शेष परपति से उत्पन्न हों।

जारजपुत्रयोगमाह

कुजो मन्दः सुतस्थानं प्रपश्यति यदा तदा।
चन्द्रदृष्टिं विना तत्र जारजातः सुतो मतः ॥9॥

अन्वयः– यदा सुतस्थानं कुजः मन्दः प्रपश्यति तदा तत्र चन्द्रदृष्टिं विना जारजातः सुतः मतः ॥9॥

प्रेक्षा– यस्मिन् प्रश्नकुण्डल्यां प्रश्नलग्नात्पञ्चमस्थानं भौमः अथवा शनैश्चरः अवलोकयति तदा पञ्चमभावे चन्द्रग्रहावलोकनं विना परपुरुषोत्पन्नः पुत्रः भवतीति दैवज्ञानां सम्मतोऽस्तीति ॥9॥

सौम्या– यदि प्रश्नकुण्डली में मंगल अथवा शनि प्रश्नलग्न से पञ्चम भाव पर दृष्टिपात करते हों और चन्द्रमा की दृष्टि पञ्चम भाव पर नहीं हो, तो अन्य पुरुष के द्वारा भी पुत्र की उत्पत्ति समझनी चाहिये ॥9॥

विशेष– अन्य मत से किसी भी शुभ ग्रह की दृष्टि पञ्चम भावस्थ होने पर यह योग घटित नहीं होता।

योगान्तरमाह

चन्द्रादित्यौ खलाक्रान्तावङ्गं जीवो न पश्यति।
कलाहीनो यदा चन्द्रस्तदा गर्भः परोद्भवः ॥10॥

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते प्रश्नभूषणे
स्त्रीप्रश्नाध्यायः ॥8॥

अन्वयः– चन्द्रादित्यौ खलाक्रान्तौ जीवः अङ्गं न पश्यति यदा कलाहीनः चन्द्रः तदा गर्भः परोद्भवः ॥10॥

प्रेक्षा– इन्दुभास्करौ पापग्रहसहितौ स्याताम्, बृहस्पतिः प्रथमकेन्द्रं नावलोकयति, यदा अल्परश्मियुक्तः क्षीणः वा चन्द्रः तदा गर्भः परपुरुषोत्पन्नः वाच्यः ॥10॥

सौम्या– चन्द्र और सूर्य दोनों यदि किसी अशुभ (पाप) ग्रह (शनि-मंगल-राहु-केतु) से अन्वित हो और बृहस्पति लग्न पर दृष्टिपात न करे तथा क्षीणावस्था को युक्त चन्द्रमा हो अर्थात् बलवान न हो तो स्त्री द्वारा परपुरुष की सहायता से गर्भधारण होता है ॥10॥

इस प्रकार दैवज्ञजीवनाथप्रणीत प्रश्नभूषण के
स्त्रीप्रश्नाध्यायनामक अष्टम अध्याय
की आचार्य गुरुप्रसाद गौड़कृत
संस्कृत-हिन्दी व्याख्या
पूर्ण हुई ॥8॥

upayogibooks.com